कोचिन लहर

अध्यक्ष (प्रभारी)
श्री. वेकंटा रमणा अक्काराजु

संपादक
श्रीमती गौरी एस. नायर

सह संपादक
श्रीमती सूसन वर्गीस, सहायक सचिव ग्रेड-I (रा. भा.)
श्री. मानस रंजन त्रिपाठी, हिन्दी अनुवादक

सलाहकार
कप्तान. गौरी प्रसाद बिस्वाल, उप संरक्षक
श्री. जी. वैद्यनाथन, मुख्य अभियंता

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, इससे पोर्ट ट्रस्ट का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्रिका को अधिकाधिक सारगर्भक बनाने हेतु आपके सुचिन्तित विचारों का हार्दिक स्वागत है। कृपया हमें अपने विचारों से अनुगृहित करें।

पत्राचार का पता: कोचिन पोर्ट ट्रस्ट
विल्लिंगडन आईलन्ड
कोचिन - 682 009, केरल
दूरभाष : 2582006, 2582122
ईमेल : hindisectioncpt@gmail.com
टेलेक्स : 0885 - 6203
फैक्स : 0484 - 2668163

मुद्रण : निसीमा प्रिन्टर्स, कलमश्शेरी - 09,
दूरभाष - 2550849

अध्यक्ष का संदेश

एक नया कायाकल्प के साथ "कोचिन लहर" के इस अंक के माध्यम से पहली बार आपके संपर्क में आने का स्वर्णीम तथा सौभाग्यपूर्ण अवसर प्राप्त करते हुये मैं अतिशः गौरवान्वित हूँ। पत्रिकाओं का प्रकाशन वास्तव में एक ऐसा शाश्वत कर्म है जो भाषाई विकास को गति प्रदान करते हुये समाज के सामाजिक व सामासिक संस्कृति में एक अद्‌भुत समन्वय तथा संतुलन स्थापित कर ज्ञान का दीप प्रज्वलित करता है। ऐसे में पत्रिकाएँ यदि हिन्दी के हों तो उनका महत्व सर्वाधिक बढ़ जाता है। चूंकि हिन्दी हमारी गंगा-यमुनी तहजीब की जननी और देश की अनमोल धरोहर है। केवल हिन्दी ही है जो हमारी भाषायी विविधता और बहुआयामी संस्कृति के बाबजूद भाषाई सौहार्द को स्थापित करते हुये विश्व दरबार में हमारी राष्ट्रीय एकता का परचम लहराता है। हरेक भारतीय के हृदय को एक सूत्र में जोड़ने वाली सहज, सलील तथा सुबोध हिन्दी भाषा को सिर्फ़ राजभाषा की प्रतिष्ठा प्रदान कर भले ही हम हमारे सांविधानिक उत्तरदायित्व का निर्वहण किया हो परन्तु यह एक निर्विवाद सत्य है कि आज भी हम पश्चिमी भाषा के मोह में ग्रसित हैं। सही मायने में देखा जाये तो स्वतंत्रता प्राप्ति के सात दशक के उपरांत भी हम भाषायी रूप से पराधीन ही हैं। इस अवसर पर मैं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के उन चंद भावगर्भक तथा हृदयस्पर्शी शब्दों को दोहराना चाहूँगा कि किसी भी राष्ट्र का विकास विदेशी भाषा के बल पर कभी भी संभव नहीं है।

बस अब और नहीं। अब हमें भाषाई पराधीनता से मुक्ति पानी होगी। आज वह समय आ गया है कि हम सभी क्षेत्रीय भाषाई चिंतन से ऊपर उठकर पश्चिमी भाषा का मोह त्याग करते हुये हमारी राष्ट्रीय अस्मिता व संस्कृति का संवाहक हिन्दी को हमारी राष्ट्रीय पहचान बनायें। क्योंकि हिन्दी हर हिन्दुस्थानियों की अभिलाषा और राष्ट्रप्रेम की परिभाषा है।

"कोचिन लहर" पत्रिका के माध्यम से मैं हरेक भारतीय को अपने राष्ट्रप्रेम को उजागर करते हुये हिन्दी भाषा के सर्वांगीन प्रगति में अपना सक्रिय तथा निस्वार्थपूर्ण सहयोग प्रदान करने की अपील करता हूं ताकि वैश्विक परिदृश्य पर हिन्दी हमारी राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक बनें।

"कोचिन लहर" पत्रिका के निर्विघ्न प्रकाशन की शुभकामना के साथ मैं इसके सम्पादक मण्डल को धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

हिन्दी हम सब का अभियान है और भारत की शान है

हिन्दी अपनायें, देश का मान बढायें।

जय हिन्द जय हिन्दी।

श्री. वेंकटा रमणा अक्काराजु

अध्यक्ष (प्रभारी)

सन्तान वह नहीं जो माता-पिता के पहचान से जाने जाते हों, सन्तान तो वह हैं जो अपनी माता-पिता की पहचान बनते हैं।

संपादक की कमल से

हमारी सृजनात्मकता की सार्थक कृति "कोचिन लहर" के इस अंक के प्रकाशन के पावन अवसर पर आप सभी से पुनः संवाद संभाषण से मैं अत्यधिक उत्साहित हूँ। यह एक प्रमाणित सत्य है कि हर युग में भाषायी विकास के नींव पर ही सामाजिक विकास संभव हुआ है और भाषायी प्रगति के बिना समाज की प्रगति की परिकल्पना एक कल्पना मात्र है। सदियों से ही हिन्दी अपनी माधुर्यता से हमारी संस्कृति व परम्परा को सिंचती हुई जन मन की प्राणमयी भाषा बनी हुई है। हिन्दी हमारे देश की एक अतुल्य धरोहर तथा हमारी राष्ट्रीय एकता व अखण्डता तथा भारतीय संस्कृति का द्योतक है। आज आधुनिकता और प्रगति की प्रतिस्पर्धी दौड में जहाँ एक ओर विज्ञान और प्रौद्योगिकी की हवाला देते हुये हम आधुनिकीकरण का डका बजा रहे हैं वहीं भाषायी प्रगति के क्षेत्र में हम उतने ही पीछड़ रहे हैं। हम वैज्ञानिक देवनागरी लिपि से संपन्न हिन्दी जैसी समृद्ध तथा सशक्त भाषा को सामाजिक आधुनिकीकरण के साथ जोड़ पाने में कहीं न कहीं असमर्थ हो रहे हैं। यही कारण है कि आज पश्चिमी भाषा के प्रति हमारा रुझान बढ़ा है हमारे उदासीन मानसिकता के कारण ही राष्ट्रीय गरिमा का प्रतीक हिन्दी आज राजभाषा की ताज पहने सिर्फ सरकारी औपचारिकता का पात्र बन गयी है। राजभाषा हिन्दी की बदहाली के लिये हम प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी हैं। परन्तु अब राजभाषा के प्रति हमारी उदासीनता और अवहेलना के लिये हमें प्रायश्चित करना होगा। हमें भाषायी अभिव्यक्ति के बदलते स्वर को स्वीकार करते हुये हिन्दी को राजभाषायी कार्यालयीन परंपरा से मुक्त कर उसे वैज्ञानिक तथा आधुनिक चिंतन के साथ जोड़ना होगा। समाज के चहुँमुखी विकास के इस दौर में हमें हिन्दी को विज्ञान, अनुसंधान, संचार और प्रौद्योगिकी की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना होगा, हिन्दी को एक ऐसा मंच प्रदान करना होगा जहाँ वह अपने सार्वभौमिक स्वरूप को प्रकट कर सके।

हमारी इस लघु कृति "कोचिन लहर" में हमने न सिर्फ अपने कर्मचारियों की सुजनात्मकता को उजागर किया है अपितु प्रेरणा व प्रोत्साहन के माध्यम से हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग को सुनिश्चित करने की पहल की है। हमारी यह हिन्दी पत्रिका हिन्दी प्रगति अभियान का शंखनाद है। अब वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी सभी क्षेत्रीय सीमाओं को लांघ कर अपनी सार्वत्रिक काया के साथ विश्व दरबार को विभुषित करेगी और संपूर्ण भारत इस विश्व व्यापी भाषा का जनक के रूप में गर्व अनुभव करेगा। आईए, हम सब भारतीय हिन्दी के इस महत्वकांक्षी अभियान में स्वयं को शामिल कर इसे सफल बनाने का गौरव प्राप्त करें।

जय हिन्द।

गौरी एस. नायर
सचिव

अपने कर्म को ही अपना परिचय बना लीजिये, नाम की आवश्यकता नहीं रहेगी।

कोचिन पोर्ट का नया सारथी

वेकंटा रमणा अक्काराजु

पूर्व अध्यक्ष पोल आन्टणी के कार्यकाल समाप्ति के उपरांत श्री ए.वी.रमणा ने कोचिन पोर्ट के अध्यक्ष(प्रभारी) के रूप में दिनांक 08.08.2016 को पदभार संभाला। श्री रमणा बीआईटीएस, पीलानी, हीथेर्टो से (यांत्रिक) में स्नातकोत्तर अभियंत्रण उपाधिप्राप्त हैं। इससे पूर्व वे कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट में बतौर मुख्य यांत्रिक अभियंता एवं विद्युत अभियंता (स्वयं संचालित एवं अनुरक्षण) मॉडेल द्वारा एकीकृत कंटेनर संचालन को सुसाध्य बनाने में अग्रणी भूमिका निभाई। अभूतपूर्व तकनीकी ज्ञानकौशल के साथ श्री रमणा जी भारतीय पत्तन संघ के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एवं भारतीय समुद्री विश्वविद्यालय के उप निदेशक जैसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद पर अधिष्ठित रहे हैं। पोर्ट क्षेत्र में दीर्घ 26 वर्षों के गहन अनुभव के साथ वे भारतीय समुद्री विश्वविद्यालय से जुड़े आधारिक मामलों के संबंध में चेन्नई आधारित तकनीकी समिति के सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त वे सेतुसमुद्रम लोक सुनवाई समिति और भारतीय समुद्री विश्वविद्यालय के लिये संविधि की प्रस्तुति जैसे गुरुत्वपूर्ण गतिविधियों से जुड़े हैं। ओजस्वीनी प्रतिभा एवं ऊर्जापूर्ण व्यक्तित्व के धनी श्री रमणा एक ऐसे निर्णायक क्षण में कोचिन पोर्ट ट्रस्ट का अध्यक्ष जैसे गुरु दायित्व को धारण किया है, जिस समय हमारा संगठन गंभीर वित्तीय तंगी एवं अन्य समस्याओं से जुड़े विषम दौर से गुजर रहा है। ऐसे में उनका अथक अनुभव, अकूत ज्ञानकौशल एवं वलिष्ठ मार्गदर्शन हमारे संगठन के लिये एक वरदान साबित होगा। कोचिन पोर्ट ट्रस्ट परिवार की ओर से श्री रमणा जी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

उपलब्धियों के महानायक - पोल आन्टणी, आई.ए.एस.

पोल आन्टणी, आई.ए.एस

केरल कैडर के सन् 1983 बैच के आई.ए.एस. श्री पोल आन्टणी 17.02.2011 को कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला। पांच वर्ष एवं तीन माह के लंबे कार्यकाल के दौरान कोचिन पोर्ट ट्रस्ट कई मील के पत्थर को पार करते हुये अनेक कीर्तिमान स्थापित किया।

उपलब्धियाँ सुर्खियों में....

- वर्ष 2015-16 में परिचालन अधिशेष 70 करोड़ रुपये को छूआ, जो सन् 1979-80 से अब तक का सर्वश्रेष्ठ आँकड़ा है।
- पहली बार वर्ष 2015-16 में आईसीटीटी ने 4 लाख टीईयू लक्ष्य को पार किया और अप्रैल 2016 में एक माह में 40,000 टीईयू लक्ष्य को प्राप्त किया।
- वर्ष 2015-16 में हर साल निकर्षण के अनुरक्षण लागत को 100 करोड़ रुपये से घटा कर 99.65 करोड़ रुपये तक लाया गया, जो आईसीटीटी में 14.5 मीटर ड्राफ्ट के 10 से भी अधिक जलयानों को लाने में एक युगांतकारी प्रयास था।
- मट्टांचेरी वार्फ़ में कोचिन शिपयार्ड के सहयोग से 970 करोड़ रुपये की लागत पर एक अंतर्राष्ट्रीय जहाज़ मरम्मत सुविधा की स्थापना।
- पुत्तुवाईपीन में आईओसी के सहयोग से 240 करोड़ रुपये की लागत पर एक बहु उपयोक्ता द्रव्य टर्मिनल की स्थापना।

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में उपलब्धियों का परचम लहराते हुये आखिरकार श्री पोल आन्टणी दिनांक 16.05.2016 को कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष से पदमुक्त हुये एवं अब वे केरल सरकार में अपर मुख्य सचिव एवं प्रधान सचिव(उद्योग) के रूप में पदासीन हैं। उपलब्धियों के इस सुवर्ण युग के लिये कोचिन पोर्ट ट्रस्ट परिवार सदा उनका आभारी रहेगा।

हम सुखी हैं या नहीं यह सोचने का फुरसत न होना ही सुखी होने का रहस्य है।

अतुल्य भारत

गौरी एस. नायर
सचिव

एक ऐसा नाम जो स्वतः स्वयं को परिभाषित करते हुये उदात्त कण्ठ से भारत की महीमा बयां करती है। प्राचीन काल से ही भारत के ऐतिह की एक गौरवमयी परम्परा व समृद्ध विरासत रही है। भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वप्राचीन संस्कृति मानी गई है। अपनी वैविध्यपूर्ण संस्कृति एवं ऐतिहासिक धरोहर से सम्पन्न भारत विश्व दरबार में अपना एक अनन्य कीर्तिमान स्थापित किया है। उत्तर में हिमालय की बर्फ़ानी मंजर से लेकर दक्षिण में अरब सागर की नीलाम्बु सिन्धुर्मी तक इस देव भूमि भारत के कण कण में अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य भर कर ईश्वर ने अपनी अद्‌भुत चित्रकारिता का चरम निदर्शन दिया है। प्राचीन आर्य संस्कृति से लेकर मौर्य, राजपुत, मूगल सल्तनत, अंग्रेजी हुकुमत और तत्पश्चात लोकतंत्र की दहलीज तक अपनी लंबी ऐतिहासिक यात्रा की हर स्मृति को भारत बडे ही अदब से संजोये रखा है। यही कारण है कि भारत पूरी दुनिया के लिये आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बन गया है। सदियों से ही कई पर्यटक भारत के इस मनोहारिता के मुरीद रहे हैं। अपने इन पर्यटन स्थलों और ऐतिहासिक धरोहरों को एक सार्वभौमिक मंच प्रदान करने के लिये भारत सरकार के पर्यटन विभाग ने सितम्बर सन् 2002 में **'अतुल्य भारत-इन्क्रेडिबल इंडिया'** के रूप में एक विशेष मुहिम छेड़ा। इस इन्क्रेडिबल इंडिया में INDIA के पांच वर्ण INDIA अपनी महत्ता को सिद्ध करते हैं, जैसे कि I-IN HERITAGE यानि विरासत, N-NATIONALISM यानि राष्ट्रीयता, D-DIVERSITY यानि विविधता, I - INCOMPATIBLE POWER यानि अपरिमित शक्ति और A-ASSERT यानि दृढ़ निश्चय आदि की ओर संकेत करता है। इन तमाम वैशिष्ट्यों के साथ अतुल्य भारत अभियान विश्व पटल भारत का प्रतिनिधित्व करता है। विविधता के साथ एकता ही अतुल्य भारत अभियान का मूल मंत्र है। भारत के पर्यटन स्थलों एवं ऐतिहासिक विरासतों को अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान करने के साथ पर्यटन उद्योग के विकास से भारतीय अर्थनीति को एक नई दिशा देना ही इस महत्वकांक्षी अभियान अतुल्य भारत का मूल लक्ष्य है। भारत विश्व के पांच शीर्ष पर्यटन स्थलों में से एक होने के नाते अपनी इस महत्वकांक्षी अभियान में इसके सभी राज्यों के प्रमुख पर्यटन स्थलों एवं ऐतिहासिक विरासतों को चुन चुन कर शामिल किया है, फिर चाहे वह हैदराबाद की चारमीनार और तिरुपति के बालाजी मंदिर हो या कान्हा की नगरी मथुरा तथा राम की अयोध्या हो। भारत के उत्तरी भाग में जहाँ जम्मू-कश्मीर के सुहानी वादियों

जो लोग समय के साथ कदम मिला कर नहीं चलते वे वर्तमान में रहते हुये भी अतीत ही हैं।

और झीलों के लिये उसे धरती का स्वर्ग कहा जाता है और उत्तर प्रदेश के समुद्ध स्मारकों का प्रतीक ताजमहल तथा धार्मिक भावना से जुडी पवित्र नगरी शिव धाम काशी संपूर्ण उत्तर भाग का गौरवपूर्ण ऐतिह बयां करती है, वहीं दूसरी ओर दक्षिण में उपमहाद्वीप प्रवास की उज्वल विशिष्टता के रूप में वर्णित संघ शासित प्रदेश पुडुचेरी के औपनिवेशिक इमारतों और तमिलनाडु के सर्वाधिक रमणीय पर्यटन स्थल कन्याकुमारी और धार्मिक आस्था व विश्वास के प्रतीक महाबलीपुरम और रामेश्वरम मंदिर से समृद्ध ऐतिहासिक विरासत और धार्मिक संस्कृति की छाप पाये जाते हैं। उसी प्रकार भारत के पूर्वी छोर में निज़ाम का शहर तथा मोतियो का शहर के नाम से मशहूर हैदराबाद जहाँ अपनी सूचना प्रौद्योगिक व जैव प्रौद्योगिकी पार्क के लिये भारत के विकास का द्योतक है वहीं भारत के सप्ताश्चर्यों में से एक ओड़िशा के सूर्य मंदिर प्राचित वास्तु कला स्थापत्य का एक चरम निदर्शन है। इसलिये उसे यूनिस्को द्वारा विश्व ऐतिहासिक धरोहर की मान्यता दी गयी है। भारत के पश्चिमी भाग में शाहि स्थापत्य कला के लिये मशहूर राजस्थान के हवामहल, जलमहल एवं विश्व के सबसे बड़े फिल्म उद्योग के लिये सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त महाराष्ट्र की मुम्बई महानगरी की चकाचौंध नज़ारों के साथ अजन्ता, एलोरा जैसी ऐतिहासिक गुफाएँ भारत के समृद्ध विरासत हैं। भारत के मध्य भाग में स्थित मध्य प्रदेश की बात ही निराली है। इसे भारत का दिल कहा जाता है। यहां हिन्दु, मुस्लिम, शिख, इसाई कभी धर्मों के एक अद्‌भुत समन्वय पाया जाता है। यहाँ के उत्कृष्ट नक्काशी वाले खजुराहो मंदिर को विश्व ऐतिहासिक धरोहर की मान्यता दी गयी है।

अतुल्य - भारत - केरल

भारत की दक्षिण छोर पर अरब सागर के तटीय क्षेत्र में स्थित केरल अतुल्य भारत की एक अतुल्य विरासत है। नेशनल ज्योग्राफिक द्वारा "विश्व के 10 स्वर्गों" में से एक के रूप में सर्वविदित केरल, अपनी पारिस्थितिक पर्यटन पहल के लिए सार्वभौमिक पटल में विशेष रूप से प्रसिद्धि प्राप्त है। इसकी अनूठी संस्कृति और प्राचीन परंपराओं ने अपनी वैविध्यपूर्ण जनसांख्यिकी के साथ मिल कर इसे भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक बना दिया है। केरल अपने उष्णकटिबंधीय अप्रवाही जल और कोवलम जैसे प्राचीन समुद्र तटों के लिए जाना जाता है। इसके नातिशीतोष्ण मौसम, समृद्ध वर्षा, प्रकृतिक सुषमा, जल की प्रचुरता, सघन वन, लम्बे समुद्र तट, सदाबहार हरियाली और चालीस से अधिक नदियों अद्‌भुत भौगलिक संगम केरल को एक विश्वस्तरीय पर्यटन स्थल की मान्यता प्रदान किया है। फोर्ट कोच्चि, मुन्नार, वर्कला, वयानाड एवं पेरियार राष्ट्रीय उद्यान के प्रमुख पर्यटन स्थल है। केरल के प्रवेश मार्ग के रूप में परिचित फोर्ट कोच्चि भारत में आरब, ब्रिटिश, डच, पर्तुगीज आदि विदेशी शक्तियों के आगमन का एक ऐतिहासिक स्मारक है। यहाँ भारत के प्राचीन स्थापत्य कला के साथ पश्चिमी संस्कृति का एक अभिन्व संगम हुआ। अरब सागर की मध्य भाग में सर रबर्ट ब्रिस्टो द्वारा स्थापित विल्लिंगडन आईलन्ड एवं यहाँ स्थित कोचिन पोर्ट भारत को एक प्राचीन विरासत है। मुथिरपुझा, नल्लथन्नी और कुंडल, तीन पर्वतों के संगम स्थल पर स्थित मुन्नार की हरी वादियों और मनमोहक प्राकृतिक सौंदर्य हरेक पर्यटक को अपनी ओर आकर्षित करता है। वर्कला के समुद्री तट में सायंकालीन सूर्यास्त की मंजर तो देखते ही बनता है। इसके अतिरिक्त पेरियार राष्ट्रीय उद्यान तो अपने वैशिष्ट्य के लिये पूरी दुनिया में मशहूर है। केरल की सदाबहार प्राकृतिक सौंदर्य एवं अनुकूल व स्वस्थ पर्यावरण तथा अनूठी परम्परा व प्राचीन ऐतिह के कारण ही केरल को पूरी दुनिया में ईश्वर का अपना देश कहा जाता है और यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है। ●

शब्दकोश ही दुनिया में एक ऐसी जगह है जहां सक्सेस वर्क से पहले आता है।

मेक इन इंडिया ...शून्य दोष शून्य प्रभाव

सरोज कुमार दास
मुख्य यांत्रिक अभियंता

वैश्विक परिदृश्य पर भारत के चहुंमुखी विकास एवं स्वर्णिम भविष्य के प्रति यह उक्ति भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की ओजस्विनी प्रतिभा एवं ऊर्जापूर्ण व्यक्तित्व से प्रोरित एक सिंहनाद है। भारत को हर क्षेत्र में स्वावलम्बी बनाने की राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के स्वप्न को पंख देते हुये मोदी जी द्वारा की गयी यह अनूठी पहल मेक इन इंडिया अभियान एक ऐतिहासिक कदम है। आज यह केवल एक सरकारी योजना मात्र नहीं अपितु भारत के हरेक नागरिक के हृदय की वाणी बन गयी है। भारत के सभी नागरिक आज अपनी पारंपरिक सोच से ऊपर उठ कर अपने तथा राष्ट्र के भविष्य के प्रति अत्यधिक सचेतन हैं क्योंकि कदाचित सभी को यह भलीभाँति ज्ञात है कि भविष्य निर्माण का सर्वोत्कृष्ट समय वर्तमान ही होता है। भविष्य हमारे लिये एक चुनौती है और वर्तमान एक अवसर। हमें सामूहिक रूप से एकनिष्ठ प्रयास द्वारा भविष्य की चुनौती को मात देते हुये तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी की घरातल पर भारत निर्माण की रूपरेखा तैयार करना है। मोदी सरकार द्वारा की गई मुहीम मेक इन इंडिया इसकी शरूआत है।

आज इस इक्कीसवीं सदी में जहां दुनिया के सभी राष्ट्र उत्पादन, सुरक्षा, अनुसंधान, व्यापार, तकनीकी आदि हर क्षेत्र में स्वयं को सर्वांगपुष्ट सिद्ध करने एवं प्रगति के शिखर तक पहुंचने के लिये प्रतिद्वंदिता की दौड़ में शामिल हुये हैं, वहां भारत इन क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धी सोच से हट कर अत्याधुनिक ज्ञान कौशल से स्वयं को स्वावलम्बी बनाने एवं व्यापार के लिये भारत को एक वैश्विक मंच प्रदान करते हुये उसे एक विश्व शक्ति बनाने के महत्तम उद्देश्य से अनुप्रेरित है। इसी महत्वकांक्षी उद्देश्य को मूर्त रूप देने हेतु प्रगत भारत के कर्णधार मोदी जी द्वारा मेक इन इंडिया एक युगांतकारी आह्वान है।

स्वदेशी ज्ञान कौशल से सम्पन्न भारत के मंगलयान के सफल प्रक्षेपण से भारत को यह अहसास हुआ कि प्रगति के लिये वह किसी विदेशी शक्ति का मोहताज़ नहीं है। इसके एक दिन बाद 25 सितम्बर 2014 को भारत के प्रधान मंत्री ने मेक इन इंडिया अभियान का शंखनाद किया और इन महत्वकांक्षी योजना को देश की अम्लाल विभुति, पंडित दिनदयाल उपाध्याय के जन्मोत्सव के पावन अवसर पर उन्हें सर्मार्पित किया। औद्योगिक तथा व्यापार जगत के जाने माने हस्तियों के साथ साथ पूरा देश विज्ञान भवन में आयोजित इस ऐतिहासिक घटना का साक्षी रहा। इस योजना की भाँति इसका प्रतीक भी अत्यन्त प्राभावोत्पादक एवं ऊर्जापूर्ण है। इसका प्रतीक भारत के राष्ट्रीय प्रतीक से लिया हुआ एक विशाल शेर है जिसमें ढ़ेर सारे पहियें अन्तर्विष्ट हैं जो शांतिपूर्ण प्रगति और जजल्वमान भविष्य का संकेत करता है। कई पहियों के साथ चलता हुआ शेर भारत के शौर्य, दृढ़ता और बृद्धिमत्ता का प्रतीक है।

मेक इन इंडिया - उद्देश्य

विश्व दरबार में भारत को उत्पादन का एक पॉवर हॉब बनाने के साथ साथ इसकी अर्थनीति को एक प्रभावशाली लक्ष्य प्रदान करते हुये युवाओं को अपने देश में रोजगार के पर्याप्त अवसर प्रदान करना ही इस महत्वकांक्षी योजना का महत्तम उद्देश्य है। युवाओं में योग्यता संवर्धन के साथ साथ उन्हें राष्ट्रीय विकास की मुख्य धारा में जोड़ने का प्रयास भी इस उद्देश्य के साथ जुडा है। यह अभियान विश्व भर के तमाम उद्योगपतियों को भारत में पूंजी

विकल्पों का न होना बुद्धि को बढ़िया ढंग से परिमार्जित कर देता है।

निवेश कर अपने व्यापार को बढ़ाने के लिये एक व्यापारिक मंच प्रदान किया है। इस योजना में भारत के वाहन, खाद्य संसाधन, अक्षय ऊर्जा, वाहन कलपुर्जा, आईटी एवं बीपीएम, सड़क एवं राजमार्ग, विमानन, चमड़ा अंतरिक्ष, जैवप्रौद्योगिकी, मीडिआ एवं मनोरंजन, वस्त्र, रसायन, खान तापज विद्युत, निर्माण, तेल एवं गैस, पर्यटन, रक्षा विनिर्माणी, औषध, स्वास्थ्य, विद्युत यंत्रांश, बंदरगाह, इलेक्ट्रोनिक प्रणाली एवं रेलवे आदि 25 प्रमुख क्षेत्रों को शामिल किया गया है। यह योजना विश्व के प्रमुख निवेशकों के लिये भारत में अपने उत्पादों के निर्माण द्वारा अपने व्यापारिक प्रगति को सुनिश्चित करने हेतु एक मैत्रीपूर्ण आह्वान है। भारत ने अपने निवेशकों को यह भी आश्वासन दिया कि भारत में निर्मित उनके उत्पादों के अन्य देशों में बिक्री के लिये भारत की ओर से कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जायेगा। इस योजना के प्रारंभिक चरण में प्रधान मंत्री ने स्पष्ट किया कि सभी निवेशकों को इसे भारत में अपने व्यापार के लिये एक अवसर के रूप में न की एक बाजार के रूप में देखना चाहिये। घरेलू तथा विदेशी निवेशकों को व्यापार के अवसर प्रदान कर भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नया आयाम देना इस अभियान का लक्ष्य है। अपने इसी पहल के क्रम में सरकार ने वाणिज्य मंत्रालय में **"इन्वेस्ट इंडिया"** के नाम से एक विशेष इकाई की स्थापना की है जो नियामक अनापत्ति को प्राप्त करने में सहयोग करने के साथ साथ नियामक और नीतिगत मुद्दों के संबंध में सभी प्रमुख विदेशी निवेशकों का मार्गदर्शन करता है। भारत में व्यापार के लिए निवेशकों को आकर्षित करने एवं उन्हें सभी प्रकार के सहयोग प्रदान करने हेतु भारत सरकार सतत प्रयत्नशील है।

वेब पोर्टल (wwww.makeinindia.com) के द्वारा व्यापारिक कंपनियों के सभी सवालों के उत्तर देने के लिये एक सदैव तत्पर तथा समर्पित टीम प्रबंधन किया गया है। 72 घंटों के अंदर निवेशकों के विशेष प्रश्नों के उत्तर एवं उनकी सभी शंकाओं को दूर करने के लिये एक विशेष मार्गदर्शी टीम भी तैयार किया गया है। भारत में निवेश के लिये निवेशकों को आकर्षित करने हेतु निवेश तथा व्यापार प्रावधानों में कई महत्वपूर्ण संशोधन किये गये हैं।

लाभ

देश के गणमान्य अर्थशास्त्रियों एवं बुद्धिजीवियों के अनुसार इस महत्वकांक्षी योजना के कार्यान्वयन से भारत को चहुंमुखी विकास के साथ साथ सौहार्दपूर्ण समझौते से विदेशी उद्योगपतियों एवं निवेशकों के साथ मैत्रीपूर्ण संपर्क, देश की अर्थनीति में सुधार, रोजागार के पर्याप्त अवसर एवं विदेशी ज्ञान कौशल का आहरण, पारिपार्श्विक विकास, विश्वबन्धुत्व जैसे कई लाभ होंगे। देश में रोजगार के अवसर बढ़ने से प्रति व्यक्ति आय एवं आम आदमी की क्रय शक्ति में वृद्धि होगी। भारत एक ऐसा वैविध्यपूर्ण देश है जिसके पास अलग तरह की जनसांख्यिकी, लोकतंत्र और माँग है जो निवेशकों को फायदा पहुँचा सकता है। नीतिगत मुद्दों पर स्पष्टता और संसाधनों की कमी के कारण भारतीय व्यापारी भी भारत को छोड़ अपना व्यापार कहीं और जमाने की योजना बना रहे थे। अगर ऐसा होता तो यह भारतीय अर्थनीति के लिये एक शक्त आघात होता। विभिन्न प्रभावकारी संसाधनों के साथ मेक इन इंडिया अभियान किसी भी व्यापार के लिये भारत में निवेश हेतु विश्व के प्रमुख उद्योगपतियों का ध्यान आकर्षित करेगा। इस प्रभावकारी योजना से दूसरे देशों के साथ भारतीय व्यापार की अनिवार्यता एवं आयात क्षेत्र में निर्भरशीलता पूर्णतः समाप्त होगा। रोजगार के पर्याप्त अवसर से देश में गरीबी के स्तर को घटाया जा सकता है जिसकी वजह से कई सामाजिक मुद्दे भी सुलझ सकते हैं। इस योजना से देश की जीपीपी विकास दर एवं राजस्व में वृद्धि होने की प्रबल संभावना है।

शून्य दोष, शून्य प्रभाव (ZERO DEFECT, ZERO EFFECT)

किसी भी योजना के कार्यान्वयन में कोई दोष या त्रृटि पाया जाना अथवा इसका कोई प्रतिकुल प्रभाव होना स्वाभाविक ही है। परन्तु हमारे प्रधान मंत्री ने बडे ही समझदारी से गहन चिन्तन मनन कर इस राष्ट्रीय कार्यक्रम मेक इन इंडिया को डिजाइन किया है और इसके लिये शून्य दोष, शून्य प्रभाव का नारा लगाया है।

असंभव एक ऐसा शब्द है, जो केवल निराशावादियों के शब्दकोश में पाया जाता है।

इसका मुख्य आशय यह है कि इस योजना द्वारा निवेशकों को उत्पादन के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता मानकों को स्थापित करने के लिये प्रोत्साहित किया जायेगा। गुणवत्ता के साथ किसी भी स्थिति में कोई समझौता नहीं की जायेगी। परिणामतः उत्पाद में किसी प्रकार का कोई दोष नहीं रहेगा। विकास के साथ पर्यावरण की सुरक्षा भी राष्ट्रीय प्रगति का एक अनिवार्य अंग है। इसी अनिवार्यता के मद्देनजर सरकार ने उद्योगपतियों द्वारा देश में स्थापित किये जाने वाले औद्योगिक संस्थानों, कारखानों, विनिर्माणियों द्वारा पर्यावरण पर कोई प्रतिकुल प्रभाव न पड़ने हेतु सतत प्रयास करने को सर्वाधिक प्राथमिकता दी है, ताकि औद्योगिक प्रतिष्ठानों की उपस्थिति से पर्यावरण और पारिस्थितिक पर शून्य प्रभाव हो।

वास्तव में भारत को विकासशील राष्ट्र की परिधि से निकाल कर एक विकसित राष्ट्र के रूप में विश्व की प्रमुख शक्ति बनाने की महत्वकांक्षा को मूर्तरूप प्रदान करने हेतु सरकार द्वारा संचालित यह मेक इन इंडिया अभियान एक रचनात्मक प्रयास है जो भारत को विश्व दरबार में प्रसिद्धि के चरम शिखर पर प्रतिष्ठित करेगा और हम सब भारतीय गर्व से कह सकेंगे **मेरा भारत महान**। ●

हार्दिक बधाइयाँ

श्री जी. वैद्यनाथन

श्री जी. वैद्यनाथन विशाखपट्टणम पोर्ट ट्रस्ट के उप मुख्य अभियंता ने 11-5-2016 को कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के मुख्य अभियंता के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

श्री बी. भाग्यनाथ

श्री बी. भाग्यनाथ, व. उप मुख्य लेखा अधिकारी को 10-6-2016 से वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया।

स्थानान्तरण

श्री. जी. सेंथिलवेल

कोचिन पोर्ट के उपाध्यक्ष श्री जी. सेंथिलवेल ने 9-8-2016 को हालडिया डॉक कॉम्पलक्स के उपाध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

डॉ. सी. उण्णिकृष्णन नायर

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के यातायात प्रबंधक डॉ. सी. उण्णिकृष्णन नायर को 5-7-2016 से जे एस पी टी, मुंबई के मुख्य प्रबंधक (यातायात) का पद में स्थानान्तरित किया गया।

जागने के लिये आलार्म घड़ी की नहीं जूनून की जरूरत होती है।

योगः प्राचीन आर्य संस्कृति की एक अनूठी परम्परा

जी. वैद्यनाथन
मुख्य अभियंता

सदियों से ही भारत मुनिऋषियों की एक पावन भूमि रही है। योग भारत की प्राचीन आर्य संस्कृति के आध्यात्मिक धरातल पर मानवता के उत्थान हेतु वैज्ञानिक दर्शन एवं उच्च जीवन मूल्य से प्रेरित एक ऐसा शब्द है जिसका उच्चारण मात्र से हमारे अशांत मन मस्तिष्क में एक नैसर्गिक शांति की अनुभूति होती है। यह शब्द वैदिक संस्कृत के 'युज' धातु से 'घञ' प्रत्यय के योग से निष्पन हुआ है। जिसका शाब्दिक अर्थ है जोड़ना अर्थात् विभिन्न यौगिक क्रियाओं द्वारा शरीर, मन और आत्मा के बीच एक अद्‌भुत संयोग स्थापित करना जिससे चरम आत्मिक संतोष प्राप्त होता है। पुरातत्ववितों की मानें तो योग की उत्पत्ति भारत में 5000 ई पू. में हुई और गुरु शिष्य परम्परा के साथ पारम्परिक शैली से इसका विकास हुआ। प्राचीन आध्यात्मिक दर्शन और आधुनिक वैज्ञानिक चिन्तन के कई संदर्भ में योग को परिभाषित किया गया है। जहां सनातन संस्कृति के पावन ग्रंथ भगवत गीता में योग को 'योगः कर्मसु कौशलम्' अर्थात योग द्वारा कर्म में कुशलता लाना के रूप में परिभाषित किया गया है। वहीं योगशास्त्र के रचयिता महामनिषि पतंजलि ने अपने योगदर्शन में योग को 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध', अर्थात चित्त की वृत्तियों के निरोध या पूर्णतया नियंत्रण करने के रुप में परिभाषित किया है। सांख्य दर्शन के अनुसार 'पुरुषप्रकृत्योर्वियोगेपि योगइत्यमिधीयते' अर्थात् पुरुष एवं प्रकृति के पार्थक्य को स्थापित कर पुरुष का स्व स्वरूप में अवस्थित होना ही योग है। बौध खर्मानुसार 'कुशल चितैकग्गता योग' अर्थात् कुशल चित्त की एकाग्रता ही योग है। इन जटिल परिभाषाओं से हट कर हम एक सरल तथा सहज बोधगम्य शब्द योग को आज के संदर्भ में कुछ इस प्रकार स्वीकार कर सकते हैं कि योग विभिन्न शारीरिक क्रियाओं द्वारा सम्मादित एक ऐसी साधना है जो हमारे शरीर में अतिरिक्त ऊर्जाओं का सृजन कर हमें शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थता प्रदान करते हुये हर स्थिति में हमें एक दिव्य तथा अलौकिक आनन्द प्रदान करता है।

योगःशांति व स्वस्थता का वरदान

योग के माध्यम से शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के सामूहिक विकास के प्रयास किए जाते हैं। इसका लभ्य शरीर और मन को प्रशिक्षण देना होता है जिससे सभी शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों को दूर होता है। इसके अतिरिक्त यह हमारे सभी इंद्रियों को नियंत्रण करने की एक ऐसी वैज्ञानिक कला है जो हमें आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित कर हमारे अवचेतन मन को शाश्वत सत्य का ज्ञान कराता है। वैदिक मान्यताओं के अनुसार हठयोग, कर्मयोग, राजयोग, मंत्रयोग, तंत्र योग आदि योग के कई प्रकार हैं एवं

हम ऐसे हैं जो खुद पेड़ काट कर कागज़ बनाते हैं और उस पर लिखते हैं पेड़ बचाओ।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्यहार, धारणा, ध्यान और समाधि आदि आठ महत्वपूर्ण अंग हैं।

वैसे तो योग हमेशा से हमारी प्राचीन धरोहर रही है परन्तु यह हर युग में समय की चुनौती को स्वीकार करते हुये अपनी प्रासंगिकता को सिद्ध किया है। प्रायतः सभी के मन में योग को लेकर कई शंकाएँ होती हैं। कई लोग इसे व्यायाम के रूप में तो कई एक आध्यात्मिक साधना के रूप में स्वीकार करते हैं। परन्तु योग न तो पूर्ण रूप से एक व्यायाम है और न ही मात्र एक आध्यात्मिक साधना। यह तो सभी सांप्रदायिक चिन्तनों से परे केवल हमारे इन्द्रियों को नियंत्रण कर पूर्ण रूप से एकाग्रचित्त हो कर आत्म चिन्तन व आत्मिक विकास के लिये विभिन्न शारीरिक मुद्राओं द्वारा सम्पादित एक वैज्ञानिक प्रक्रिया मात्र है।

आज की तेज रफ़्तार जिन्दगी में जहाँ एक ओर विकास के नाम पर औद्योगिक प्रतिष्ठानों की उपस्थिति से मात्राधिक प्रदूषण के चलते निरंतर पर्यावरण एवं पारिस्थितिक में भारी परिवर्तन हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर न्यूनतम समय में सर्वाधिक खाद्यान्न उत्पादन करने की होड़ में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से खाद्यसामग्रियों का विषाक्तन किया जा रहा है। ऐसी भयंकर तथा विषम परिस्थितियों में स्वयं को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ एवं ऊर्जावान बनाये रखना सभी के लिये एक चुनौती बन गयी है। चाहे देहात हो या महनगर आज हर कोई अपने स्वास्थ्य को लेकर चिंतित है। यही कारण है कि आज व्यायाम और योग के प्रति समाज के हर वर्ग और हर आयु के लोग का रुझान बढ़ा है। आज योग स्वस्थ जीवन की एक जरूरत बन गया है।

बिना किसी अर्थ विनियोग और अधिक श्रम के, आजीवन स्वस्थ तथा ऊर्जावान बने रहने का सबसे सरल, सुरक्षित और स्वस्थ तरीका केवल योग ही है। इसके लिए एक कुशल प्रशिक्षक के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में शरीर के विभिन्न मुद्राओं और श्वासग्रहण के सही तरीकों का नियमित अभ्यास की आवश्यकता है। यह अच्छे स्वास्थ्य प्रदान करते हुये हमारी भौतिक आवश्यकताओं, आत्मिक ज्ञान के विकास के माध्यम से बौद्धिक तथा मानसिक आवश्यकताओं और आन्तरिक शान्ति के माध्यम से आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। योग के नित्य अभ्यास से सभी प्रकार के तनाव दूर हो जातें हैं, मन व मस्तिष्क में हमेशा शांति बनी रहती है। शरीर में रोग प्रतिरोधी क्षमता का विकास होता है जिससे रोग होने की संभावना प्रायतः समाप्त हो जाती है। योगासन और प्राणायाम से मानसिक क्षमता का विकास होता है जिससे हमारे स्मरण शक्ति पर गुणात्मक प्रभाव पड़ता है, परिणामतः हमारे चित्त में शांति और धैर्य उत्पन्न होता है। इसके नित्य अभ्यास से हमारे मांसपेशियाँ सुगठित होते हैं और शरीर संतुलित होता है। सुगठित मांसपेशी और संतुलित लोचदार शरीर से हमारी कार्य दक्षता में वृद्धि होता है। यह हमारे इंद्रियों को नियंत्रित कर शरीर के सभी अंगों में अफुरंत शक्ति जाग्रत करते हुये शरीर और आत्मा के बीच एक अद्‌भुत संपर्क स्थापित करता है जिसके नित्य अभ्यास से मानव को इस भौतिक तथा पार्थिव संसार से परे उस पारलौकिक तथा महाजागतिक शक्ति का ज्ञान होता है। धीरे धीरे उसमें निहित सभी कुप्रवृत्तियाँ समाप्त हो जाती हैं, सभी सकारात्मक शक्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं और वह आध्यात्मिक चिंतन से प्रेरित होकर शाश्वत मार्ग के ब्रती बन जाता है।

योग का अभ्यास किसी भी आयु के स्त्री व पुरुष द्वारा किया जा सकता है, क्योंकि यह आयु, धर्म और स्वस्थ परिस्थितियों से परे है। योगासनों तथा प्राणायाम का सही जानकारी के साथ इसका सही अभ्यास अत्यन्त प्रभावकारी होता है। इसके गलत अभ्यास से लाभ के स्थान पर हानि होने की संभावना अधिक रहती है। इस लिये एक कुशल प्रशिक्षक के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन से ही इसका अभ्यास किया जाना अत्यन्त लाभकारी होता है,

दुनिया में लोग आईना कभी न देखते अगर आईना में चित्र नहीं चरित्र दिखाता।

क्योंकि विभिन्न परिस्थितियों में अर्थात् अलग-अलग शारीरिक दशा वाले व्यक्तियों के लिए किस तरह का आसन उपयोगी है, इसका निर्णय प्रशिक्षक या गुरु ही भली-भाँति कर सकते हैं। उचित समय, उचित स्थान, स्नान, स्वच्छता, भोजन एवं वस्त्र इत्यादि का निर्णय भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है तभी योगासन और प्राणायाम का उचित लाभ लिया जा सकता है।

योग की उत्पत्ति भले ही भारत में हुआ हो परन्तु आज यह सभी क्षेत्रीय सीमाओं को लांघ कर विश्व दरवार में अपनी महत्ता और अनिवार्यता को सिद्ध किया है। आज यह एक प्रमाणित सत्य है कि भविष्य में योग के बिना एक स्वस्थ जीवन की परिकल्पना नहीं की जा सकती। इसी वैश्विक अनिवार्यता को ध्यान में रखते हुये संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस अथवा विश्व योग दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। संपूर्ण मानव जाति आज भारत के प्राचीन आर्य संस्कृति के इस धरोहर को निर्विवाद से स्वीकार किया है और इसे शारीरिक व्यायाम व आध्यात्मिक साधना की सीमित परिभाषा से पृथक कर एक संपूर्ण स्वस्थ तथा ऊर्जापूर्ण जीवन की प्राप्ति के लिये एक चमत्कारी तथा सर्वथा विकसित वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में स्वतन्त्र मान्यता प्रदान किया है। एक वाक्य में हम यह कह सकते हैं कि योग यानि जीरो बजट में हेल्थ गारंटी।

"योग अपनायें और स्वस्थ शरीर पायें।"

अरब सागर की रानी

मरियाम्मा मात्यु
प्रबन्धक

हे सुंदरी! शांतस्वरूपिणी
काव्य मनोहरी कोच्ची
अरब सागर की रानी है तू
इस केरल मिट्टी की खुशबू है तू।

अनुभूति उठाती हज़ारों अनुभवों की
दिव्य सुंदरी कोच्ची
सागर नारी के माथे पर
सिंदूर तिलक जैसी।
झीलों की अपारता से

आलिंगन करनेवाली कोच्ची
नीर भरी अपनी छाती पर
हंसती मोती।

प्रातकाल तुषार में
आपकी भरित मोहित भाव
निद्राविहीनवाली रात में
दीप से प्रज्वलित।

वसंत ऋतु आती है बाग में हमेशा
भ्रमर मंडाराती रही है
धीमी फैलती हवा हर कहीं
छोटी सी लहरें उठाती है।

दूर झील की ओर किनारे दृश्य होती
लंबी पक्तियों की चीनी नेट
फैलती हवा की ध्वनि समतुल्य
उठाती है मर्मर-ध्वनि।

एक कर्मकुशल विदेशी ब्रिस्टो ने
एक बन्दरगाह वहीं बनाई प्राचीन में
चारों दिशाओं के भिन्न मानव
मिलने आते है आपसे।

देश की ख्याति
बढ़ती जाती प्रतिदिन
चमकनेवाले आपके निष्कलंक भाव
निष्कपट है क्या मेरे प्यारी

सत्य सभी के लिए नहीं होता, वह केवल उसे खोजने वालों के लिए होता है।

सागर संरक्षण

कप्तान. गौरी प्रसाद बिस्वाल
उप संरक्षक

मानव की विकास प्रक्रिया और आधुनिकता की कोख से उत्पन्न प्रदूषण एक ऐसा अभिशाप है जिसकी चरम विभिषिका से केवल मानवजाति ही नहीं अपितु दुनिया की जैवसंपदा वनस्पति संपदा तथा संपूर्ण पर्यावरण त्रस्त हैं। पर्यावरण में दूषक पदार्थों के प्रवेश के कारण हमारे पारिस्थितिक तंत्र के संतुलन में पाये जाने वाले दोष तथा अवांच्छित परिवर्तन को ही प्रदूषण कहा जाता है। प्रदूषण का परिणाम है विनाश और केवल जागरूकता और नियंत्रण ही इसका एक मात्र बचाव है। वायु, जल, ध्वनि आदि प्रदूषण के कई प्रकार माने गये हैं। जिसमें से वायु और जल को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गयी है।

लवणीय जल का एक सतत निकाय सागर पृथ्वी के जलमण्डल का एक प्रमुख भाग है। यह पृथ्वि के लगभग 71 भाग पर फैला हुआ है। विश्व का करीब 98 प्रतिशत जल सागरों में और करीब 2 प्रतिशत जल नदियों, झीलों एवं भूगर्त तथा मिट्टी में हैं। जलराशि की इसी अथाह व्यापकता के कारण पृथ्वी को जल ग्रह भी कहा जाता है। जल की बहुताात उपस्थिति के कारण अन्य ग्रहों में से केवल पृथ्वी में ही जीवन संभव हो पाया है। पृथ्वी की इस अथाह जलराशि का प्रदूषित होना आज एक वैश्विक समस्या बन गयी है। दिन व दिन इसकी वर्दिधत प्रदूषण की मात्रा एवं इसके चलते भविष्य के अवश्यम्भावी विनाश से निजात पाने के लिये दुनिया भर के बृद्धिजीवी पुरजोर प्रयास कर रहे हैं।

समुद्री विशेषज्ञों के अनुसार समुद्र तटवर्ती क्षेत्रों में मानव सभ्यता का विकास, औद्योगिक प्रतिष्ठानों की स्थापना, आणविक प्रयोगशालाओं की उपस्थिति, नौवहन के दौरान जहाजों से तेलों का रिसाव, समुद्र तल का उत्खनन आदि समुद्री पारिस्थितिक तंत्र में प्रदूषण के प्रमुख कारक हैं। अमूमन समुद्री प्रदूषण का सबसे सीधा स्त्रोत है नदियाँ। साधारणतः औद्योगिक प्रतिष्ठान नदी जल का उपयोग करते हैं और अपने मलबे को सीधे नदियों में छोड़ देते हैं जिससे नदियाँ दूषित होती हैं और इनके सागरों से मिलने से सागर भी दूषित होते हैं। कभी कभी औद्योगिक कचरों के साथ प्रयोगशालाओं से निर्गत जहरीले तथा हानिकारक रेडियोधर्मी मलबे भी सीधे नदी के माध्यम से सागरों में मिलते हैं। ज्यादातर प्रदूषण मिट्टी से होता है। खनन के दौरान खनिजों के निस्सरण से प्रदूषित मिट्टी नदियों के साथ बहते हुये सीधे समुद्र में प्रवेश करते हैं। उत्पादकता में वृद्धि के लिये कृषि में प्रयोग किये जा रहे रासायनिक उर्वरक तथा कीटनाशक सहजता से मिट्टी में विघटित नहीं होते और यह नदियों के माध्यम से सागरों में जा मिलते हैं और प्रदूषण फैलाते हैं। समुद्री प्रदूषण का अन्य प्रमुख स्त्रोत हैं जहाज़ों का आवागमन। तेल जहाज़ों से तेल रिसाव से समुद्र मात्राधिक प्रदूषित हो रहे हैं। साधारणतः कच्चे तेलों में पोलीसाइक्लिक एरोमैटिक हायड्रोकार्बन्स (पीएएच) अधिक मात्रा में पाये जाते हैं जिसके रिसाव से यह सालों तक समुद्री वातावरण में बने रहते हैं और इसे जहरीला बना देते है। मालवाहक जहाज़ों द्वारा मल जल और कचरे को सागरों में निर्बाध रूप से छोड़ा जा रहा

खुद को बेहतर बनाने के लिये इतना समय दें कि दूसरों की बूराई करने का आपके पास समय ही न बचें।

है जिससे समुद्री प्रदूषण की मात्रा में निरंतर वृद्धि हो रही है। समुद्र तटवर्ती क्षेत्रों में औद्योगिक प्रतिष्ठानों से निर्गत धूआं से वायुमण्डल प्रदूषित हो रहे हैं और इस वायुमंडलीय प्रदूषण का सीधा प्रभाव सागरों पर पड़ता है, जिससे सागरों के तापमान बढ़ रहे हैं और वायुमण्डल में कार्बन डायअक्साईड की मात्रा में वृद्धि हो रही है, इसकी वर्द्धित मात्रा सागरों को अम्लीय बना रहे हैं परिणामतः यह जलीय पारिस्थितिक तंत्र को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचा रहे हैं। समुद्र तल उत्खनन को भी प्रदूषण का अन्यतम कारक माना जा सकता है। खनिजों की प्राप्ति के लिये समुद्र तल के उत्खनन की प्रक्रिया में निकले मलबे को नीचे खनन स्थान में वापस पंप कर दिया जाता है और यह मलबे तैरते हुये सागर जल के गंदलेपन को और बढ़ा देते हैं। इसके अतिरिक्त समुद्री तटीय प्रदेश में दिन व दिन नये नये रिसट्र्स, मॉल, होटल, लागून आदि अबाध गति से मात्राधिक रूप से बनाये जा रहै हैं इससे जहाँ एक ओर देश के पर्यटन उद्योग समृद्ध हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर इससे निकले मलबे सीधे समुद्र में डाल दिया जाता है। समुद्री प्रदूषण में तटवर्ती क्षेत्र में स्थित महानगरों की भूमिका को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। विशाल जनसंख्या वाले इन महानगरियों के सभी नालों, गट्टरों का पानी सीधे समुद्र में छोड़ दिया जाता है। समुद्र में पाये जाने वाले दूषक तत्वों में से करीब 80 प्रतिशत मानव द्वारा फेंके गये कचरा व प्लास्टिक है। यह एक ऐसा अवयव है जो सहज ही पानी में विघटित नहीं होता। पैस्टिक पदार्थों के उत्पादन में प्रयोग किये जाने वाले रासायनिक तत्व समुद्र पानी के लवणत्व के संपर्क में आने से अत्यधिक जहरीले बन जाते हैं और सहज विघटन न होने की स्थिति में ये सालों तक पानी में तैरते रहते हैं और समुद्री जीव संपदा के पाचन व श्वसन तंत्र को भारी नुकसान पहुंचाते हैं। प्लास्टिक के अलावा डीडीटी, कीटनाशक, रेडियोधर्मी कचरा जैसे अन्य विषैले पदार्थ समुद्री वातावरण में तेजी से विघटिन नहीं होते जिससे प्रदूषण की मात्रा और भी बढ़ जाती है। यह मानवजनित प्रदूषण समुद्री पारिस्थितिक तंत्र की जैव-विविधता और उत्पादकता को बूरी तरह से प्रभावित करता है। समुद्री प्रदूषण भविष्य में पृथ्वी पर जीवजगत के अस्तित्व के लिये सबसे बड़ी चुनौति है। वैश्विक स्तर पर इस अवश्यम्भावी विनाश को रोकने के लिये दुनिया भर में सागर संरक्षण के प्रयास अब जोर पकड़ रहा है। सागर संरक्षण जैसे सार्वभौमिक मुद्दे पर सर्वप्रथम दुनिया के 113 देशों द्वारा जून, 1972 में स्टोकहोम में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन में चर्चा की गयी थी। परिणामतः एक नई अंतर्राष्ट्रीय संस्था-'महासागर तथा तटवर्ती क्षेत्र कार्यक्रम केन्द्र' की स्थापना हुई। यह संस्था दुनिया भर में सागर संरक्षण हेतु प्रतिबद्ध है। इस अंतर्राष्ट्रीय संस्था द्वारा प्रदूषित सागरों की सूची तैयारी की गयी है और चरणवार रूप से सागरों सी सफ़ाई अभियान शुरू किया गया है। अब इस संस्था की अनुमति से आवश्यक मात्रा में हानिकारक अवयवों को पहले विघटित कर समुद्री तट से दूर अधिक गहराई वाले क्षेत्र में गिराये जाते हैं ताकि वह जीवजगत को हानि न पहुंचा सके। सागर मे तेलीय प्रदूषण की रोकथाम के लिये क्षेत्रीय तेल प्रतिरोध केन्द्र की स्थापना की गयी है जो ऐसे तेल अवशोषण यंत्र विकसित किया है जो समुद्र में तेल के रिसाव की स्थिति में बहद उपयोगी हैं और इससे समुद्री प्रदूषण की मात्रा में काफी कमी आयी है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अंतर्गत अब तक 17 देशों में अत्याधुनिक तथा विकसित समुद्री तकनीकी से समृद्ध 120 प्रयोगशालाएँ बनायी गयी जो निरंतर सागर प्रदूषण संबंधी गतिविधियों का निरीक्षण कर रहा है भारत का राष्ट्रीय महासागर विज्ञान संस्थान (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओशनोग्राफी) भारत का समुद्री पर अपनी पैनी नजर रखता है और समुद्री प्रदूषण की रोकथाम कि दिशा में जन सचतनता मुहिम शुरु कर दिया है।

सागर संरक्षण जैसे व्यापक अभियान के लिये केवल सरकारी स्तर पर प्रयास ही काफी नहीं है। इसके लिये निजी तौर पर

मंजिल कितनी भी ऊँची क्यों न हो उसकी रास्ता हमेशा पैरों के नीचे होती है।

आंतरिक प्रयास की ज़रूरत है। अब समय आ गया है कि हम प्रकृति और इसके सभी संसाधनों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को तह दिल से स्वीकार करें और बिना किसी लापरवाही के इसके संरक्षण के लिये सतत प्रयत्नशील तथा सदैव तत्पर रहें। क्योंकि प्रकृति से ही जीवजगत का अस्तित्व संभव है। प्रकृति के बिना इसकी परिकल्पना एक कल्पना मात्र है। ●

समय ही ईश्वर

बिन्दु षाजी
नर्सिंग सिस्टर

भागो रे भागो रो दस बज गया
साँस फूलके फेफड़े बाहर निकला
है राम! कब तक चलेगा ये दौड़ मेरा
सोचती थी मैं कुछ महीने पहले तक।।
निकली घर से सीधा दफ्तर
फिर बाज़ार होके, रात को वापस घर
तुरंत घुसी रसोई में, निकली बाहर फिर दस को
है रात! कब तक चलेगा ये दौड़ मेरा।।
सोच सोचके निकाल गए हर सबेरा मेरा।।
नाशता करके और खिलाके, बस्तों में टिफिन भी भरके
बच्चों को स्कूल भेजके, खुद को भी तैयार किया
सजना सवरना तो दूर की बात
सलवार कुरता माँच किया तो कर लो बात।।
घर से निकलते ही दौड़ शुरु हुई
बस भी छूटा, चप्पल भी टूट गई
आधी ज़िंदगी रास्ते में कटी
गोरे हुए अब काले बाल
बच्चों के भी बच्चें होने लगे।।
इस बीच दिल ने दिमाग से बोला
ये क्या बनाया तुमने अपना हाल
साँस भी लिया करो कभी
वर्षा दिक्कत हमें होंगी।।
तब जाके सरकार ने बोला
अब बस भी करो तेरी ये दौड़
खुशी की मारे घर लौटी मैं सोचा
अभी होगा आराम ही आराम।।
अचानक ये क्या हुआ, सब कुछ थमसा गया
काम तो कुछ भी नहीं करने को
घर बैठे प्यार भी करूं किसको
पोता पोती जो निकल स्कूल को।।
सोचती हूं मैं, क्या यही है ज़िंदगी
जवानी गई अपनों में, बूढापा छाई तनहाई में
है समय, तू रुकता भी है किसी केलिए?
और तुम्हें कोई रोक पाएगा भी?
नाचते है सब तेरे इशारेपे और
नचाता है सबको तू अपने ऊँगली पे
दिखाता है सब कुछ, अच्छा और बुरा
जीना सबको सिखाता भी तू
जब सबकुछ तुम्ही हो तो क्या
ईश्वर भी तुम्ही हो??

दुनिया हमारे उदाहरण से बदलेगी हमारी राय से नहीं। हमेशा दूसरों के लिये एक उदाहरण बनें।

काला धनः भारतीय अर्थनीति का एक कलंकित अध्याय

बी. भाग्यनाथ
वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है। इसकी अर्थ व्यवस्था भी अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर रफ़तार पकड़ चुकी है और विकासशील अर्थनीति की हदों को अतिक्रम करते हुये विकसित अर्थनीति के लिये उड़ान भर चुका है। अब वह दिन दूर नहीं जब भारत को विश्व के प्रमुख वित्त शक्तियों में गिना जायेगा। भारत के इस महत्वकांक्षी अभियान के लिये यह बेहद आवश्यक है कि हमारे पास एक ऐसी समृद्ध तथा संतुलित अर्थव्यवस्था हो जिससे देश के वित्तीय संसाधनों का विनियोजन केवल राष्ट्र के आर्थिक विकास क्षेत्र के लिये सहायक सिद्ध हो। परन्तु विगत कुछ वर्षों से वैश्विक आर्थिक पटल पर हमारी प्रतिष्ठा में एक कलंक लगा है और वह कंलक कुछ और नहीं काला धन ही है। चंद वर्षों से काले धन की प्रादूर्भाव से हमारी अर्थ व्यवस्था पूर्णतः असंतुलित हो गया है और देश में इसके समानान्तर एक और अर्थ व्यवस्था विकसित हुई है जो अपनी पूर्ण वास्तविकता के साथ देश की मूल अर्थ व्यवस्था बन गयी है और यह व्यवस्था काले धन की है जो हमारी राजनीति, रक्षानीति, सामाजिक स्थिति आदि को अपने चपेट में लिया हुआ है।

अमूमन काला धन को हम विदेशी बैंकों में संचित किये गये धन के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। परन्तु इसका विधिक और व्यावहारिक परिभाषा अलग है। सरकारी तथा विधिक परिभाषा की मानें तो काला धन वह अर्जित कमाई होती है जिस पर टैक्स की देनदारी तो बनती है परन्तु मन्दोद्देश्य से प्रेरित उसकी जानकारी आयकर विभाग को नहीं दी जाती है। इसके अतिरिक्त व्यावहारिक तौर पर काले धन का आशय ऐसे धन या ऐसी कमाई से है जो प्रतिबंधित सामाजिक नियमों का उल्लंघन कर अवैध रूप से अर्जित किया गया हो। इस प्रकार की कमाई में किडनैपिंग, स्मगलिंग, ड्रग्स कारोबार, अवैध खनन, जालसाजी, घोटाले, ऑफसरशाहों की रिश्वतखोरी आदि शामिल है। काले धन का एक और स्वरूप काली संपदा भी है यानि व्यक्ति अपने काले धन को आयकर विभाग के कराधान की दृष्टि से छूपा कर सफ़ेद करने की प्रक्रिया में सोना, चांदी, हीरे जैसे बहुमूल्य धातुओं से निर्मित आभूषणों, जमीन, आवासीय भवन फार्महाउस आदि अचल एवं व्यापारिक परिसम्पत्तियों और बहुमूल्य वाहन आदि चल सम्पत्तियों के रूप में विनियोग किया हो और जिसका सार्वजनिक रूप से घोषणा न किया गया हो। अतः हम काले धन की परिभाषा को महज़ विदेशी बैंकों में संचित किये गये धन के रूप में सहजता से स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि बहुराष्ट्रीय औद्योगिक प्रतिष्ठानों के मालिकों का कारोबार दुनिया के कई देशों में फैला हुआ है और वे अपनी कमाई को विदेशी बैंकों में जमा करते हैं, तो ऐसे में उनदी कमाई को काले धन की दायरे में लाया जाना कहां तक मुनासिब है। काला धन तो देश के अंदर भी जमा हुआ है जिसकी जानकारी आयकर विभागो को नहीं दी जाती है।

काले धन के स्त्रोत

काला धन मुख्यतः दोनों सूत्रों से पाप्त होतो हैं। व्यक्ति अपने जिस आय को अघोषित रखता है और उस पर विधिवत

ईमानदार व्यक्ति न तो प्रकाश से डरता है और न ही अंधकार से।

आय कर नहीं भरता उतना धन काले धन की दयारे में आ जाते हैं और दूसरा है अपराधिक गतिविधियों से जुड़े स्रोत। चूँकि आय के अधिकांश वैध स्रोत की जानकारी आयकर विभाग को होती है और वह ऐसे आयों पर कररोपण करता है परन्तु अबैध स्रोतों से अर्जित आय मुख्यतः अद्योषित ही रहता है, इसलिये उस पर कराधान संभव नहीं हो पाता। अतः काले धन का मुख्य स्रोत अवैध गतिविधियों से जुडे स्रोत ही होते हैं। भारत के काला धन के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा जारी रिपोर्ट की मानें तो भारत में काले धन की समस्या देश के अंदर व देश के बाहर परिवर्धित अवैध गतिविधियों का ही परिणाम है। अवैध गतिविधियों को छोड़ हमारे देश में जहां कर वंचन (Tax Evasion) की प्रणाली काले धन के सृजन में सहायक होते हैं वहीं दूसरी ओर हमारी अर्थ व्यवस्था में मुद्रा स्फीति (Inflation) तथा उत्पादित सामग्रियों के बाजार मूल्य एवं वितरण के लचर नियम काले धन को जन्म देती है। कुछ असाधू मुनाफ़ाखोर व्यापारी उचित भण्डारण मात्रा से आधिक उत्पादित सामग्रियों के बाजार मूल्य एवं वितरण के लचर नियम काले धन को जन्म देती है। कुछ असाधू मुनाफ़ाखोर व्यापारी उचित भण्डारण मात्रा से अधिक उत्पादित सामग्रियों को संचित कर बाजार में सामग्री की कृत्रिम कमी पैदा करते हैं और बाद में उसे अधिक मूल्य पर काले बाजार में बेचते हैं जिसके चलते काले धन में अभिवृद्धि होती है। आज कल भूमि, भवन आदि अचल परिसंपत्तियों का हस्तांतरण काले धन का एक बहुत बड़ा स्रोत बन गया है। इस प्रकार के हस्तान्तरण तथा व्यापार के लिये सरकार द्वारा कुछ निर्धारित पंजीकरण शुल्क तय किया हुआ होता है परन्तु जमीन के ठेकेदार तथा दलाल सरकार द्वारा तय की निर्धारित मूल्य से कहीं ऊंचे दाम पर सौदा कर मोटे अंक की काला धन अर्जित कर लेते हैं और दलाल और ग्राहक की मिलीभगत से सरकारी शुल्क के अनुसार जमीन तथा भवन का पंजीकरण किया जाता है जिससे सरकार को काफी राजस्व हानि होती है और काले धन की वृद्धि होती है।

देश की अर्थ व्यवस्था पर काले धन का प्रभाव

भारत विश्व की एक उभरती अर्थ शक्ति है। परन्तु काला धन दीमक की भाँति इसकी अर्थ व्यवस्था को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहा है। यह देश की अर्थ व्यवस्था को असंतुलित बना देता है। सरकार के आय तथा देश के सीमित वित्तीय साधनों में सबसे बड़ा रुकाबट पैदा करता है। चूंकि ऐसे अघोषित धन पर सरकार को टैक्स प्राप्त नहीं होता और राजस्व की हानि होती है अतः सरकार देश की अर्थ व्यवस्था में संतुलन बनाये रखने के लिये मजबूरन करों में वृद्धि कर रही है जिसे आम जनता को मंहगाई की मार सहनी पड़ती है। आम तौर पर इस प्रकार के धन का उपयोग उत्पादन के बदले विलासिता एवं आडम्बरपूर्ण फिजूलखर्ची में किया जाता है। इससे विलासमयी सामग्रियों की माँग ज्यादा होती है जो तस्करी, लूटपाट जैसी अपराधिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करती है। काले धन को विदेशी बैंकों में जमा करने से देश के वित्तीय प्रवाह में अवांच्छित परिवर्तन होता है। इसके कारण गैरकानूनी गतिविधियाँ, जालसाजी, भ्रष्टाचार, अवैध धन वसूली, अपमिश्रण जैसी कई प्रकार की सामाजिक बुराइयाँ भी पैदा होती हैं।

निवारण के कारगर उपाय

सरकार देश में काले धन जमाखोरों के प्रति कड़ी रुख अपनाये और इस संबंधी नियमों को और सुदृढीकरण करें साथ ही देश के प्रति व्यक्ति औसत आय के साथ उसके औसत व्यय का एक वास्तविक सूची तैयार करें जिससे काले धन जमाखोरों का आसानी से पता चल सकता है। विमुद्रीकरण काले धन रोकने का सबसे कारगर उपाय हो सकता है। सरकार को चोरी तस्करी तथा अवैध कारोबार की रोकथाम के लिये कुछ गंभीर नियम बनाने होंगे जिसके सख्त अनुपालन से काले धन का एक प्रमुख स्रोत का मूलोत्पादन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त कालेधन की समस्या और इसके चलते भविष्य के अवश्यम्भावी गंभीर आर्थिक तथा सामाजिक संकट को सर्वाधिक प्राथमिकता देते हुये सरकार को इस संदर्भ में एक सुदृढ गुप्तचर

सुंदरता शराब से भी बदतर है यह रखने वाले और देखने वाले दोनों को मदहोश कर देती है।

एजेंसी का गठन करना चाहिये जो काले धन धारकों का पता लगायें ताकि सरकार उन पर विधिक कार्रवाई कर सके। व्यय कर के सख्ती से लागू होने पर भी काले धन को काफी हद तक नियंत्रण किया जा सकता है।

काला धन वास्तव में एक आर्थिक व सामाजिक प्रदूषण है। काला धन अर्जित करने की मनोवृत्ति केवल एक विकृत मानसिकता ही है और सीधे तौर पर एक राष्ट्र द्रोही चिन्तन यह केवल एक सामाजिक या राजनीतिक समस्या नहीं है अपितु यह संपूर्ण राष्ट्र की ससस्या है क्योंकि काला धन हमारे राष्ट्र के माथे पर लगा एक ऐसा कलंक है जो वैश्विक आर्थिक पटल पर हमारी प्रतिष्ठा पर प्रश्न चिह्न लगा रहा है। इसके निवारण के लिये केवल सरकारी स्तर पर प्रयास जागरूकता ही बचाव है राष्ट्र के हरेक नागरिक जो काला धन मुक्त भारत निर्माण अभियान में शामिल होना है। अतः भारत के हरेक नागरिक से निवेदन है कि निष्टापूर्वक अपने आय का विवरण सरकार को दें और समुचित कर के भुगतान से एक समृद्ध भारत निर्माण में अपना योगदान दें। सही मायने में यह इस आर्थिक प्रदूषण के निवारण के लिये एक स्वच्छ भारत अभियान होगा। ●

इदम् शरीरम् परोपकारार्थम्?

बिन्दु षाजी
नर्सिंग सिस्टर

जंगल में राजा रास्ता भटकते हुए घूमते-फिरते एक आश्रम में पहूँच गया। उधर एक संत पौधा सींच रहा था। थके हुए राजा को देखकर संत ने आकर अतिथि सत्कार किया। उसी वक्त ही एक दूसरा आदमी भागते हुए आश्रम में प्रवेश किया। किसी जानवर को देखकर वह डर से दौड़ रहा था, और गिरकर बहुत धायल भी हुआ और खून भी बह रहा था। तुरंत संत ने राजा को छोड़कर उस आदमी की देखभाल की। उसे संभालने के बाद जब वापस आया तो राजा ने संत से पूछाः- क्या आप मेरे तीन प्रश्नों का उत्तर दे सकते है? पहला प्रश्न - सबसे मुख्य व्यक्ति कौन है? सबसे अच्छा समय कब है? और तीसरा सबसे अच्छा काम क्या है?

संत ने तुरंत जवाब दिया। है राजा, जब आप आये तब मैं पौधों को सींच रहा था। उस समय मेरा सबसे मुख्य काम वह था। लेकिन जब थके हुए आपकी देखभाल की ज़रूरत हुई तब मैं ने आपको पानी पिलाया, उसी वक्त वह धायल आदमी आये तो मैं ने आप को छोड़कर उसकी देखभाल की।

जिसको सबसे ज़्यादा सेवा ता देखभाल की ज़रूरत है वह ही सबसे मुख्य है। यही पहली प्रश्न का उत्तर है। सुश्रूषा था सेवा में लगे हुए समय ही सबसे अच्छा समय है। और सबसे अच्छा काम तो निश्तिक रूप से सेवा ही है। क्योंकि दूसरों की सेवा केलिए ही ईश्वर ने हमें यह शरीर दिया है।

"परोपकारार्थ्म इदम् शरीरम्"

लेकिन आजकल लोग सेवा की नाम से दूसरों को लूट रहे है। इसलिए सेवा की हकदार कौन है? यह तय करना सबसे बडी बात हो गई है। ज़रूरत हो या न हो, हर बात पर ढूठ बोलना लोगों की आदत ही बन रई है। इसी वजह से सेवा की ज़रूरत चाहनेवाले लोग को सेवा नहीं मिलती है। और उन्हें आगे भी कष्ट सहना पड़ता हैं।

कम प्रतिभा के साथ बड़ी महत्वाकांक्षा हमेशा खतरनाक होता है।

लोक प्रशासन एवं पारदर्शिता

सी. प्रेमकुमारी
वरिष्ठ उप सचिव

वर्षों के अथक श्रम व बलीदानों के उपरांत स्वतंत्र भारत में 26 जनवरी 1950 को लोकतंत्र का सूर्योदय हुआ। इस ऐतिहासिक तिथि के साथ भारत की शासन व्यवस्था सदियों से चली आ रही राजतंत्र की पारंपरिकता एवं अंत में उपनिवेशिक बर्चस्व की जंजीर को तोड़ कर आजाद भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का नीवं पड़ा।

आम तौर पर हम शासन को राज करना अथवा एक सत्ता के अर्थ में ले लेते हैं परन्तु वास्तव में यह सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से सुव्यवस्थित एक ऐसी व्यवस्था हे जो समाज में अनुशासन श्रृंखला को बनाये रखती हे। एक सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य के लिये अनंत काल से सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था की अनिवार्यता रही है। प्रत्येक समाज में व्यवस्था बनाये रखने के लिये कोई न कोई निकाय या संस्था होती है जिसे हम प्रशासन तंत्र कहते हैं। मानव सभ्यता के विकास के इतिहास को अगर हम विश्लेषण करें तो प्राचीन काल के राजतंत्र से लेकर अब तक के लोकतंत्र तक समाज में प्रशासन की एक परिनिष्ठित व्यवस्था रही है। समाज में निर्धारित सामाजिक, राजनीतिक, न्यायिक, व्यापारिक आदि नीतिनियमों के संचालन के लिये प्रभावी तंत्र को ही प्रशासन कहा जाता है। प्रशासन मुख्यतः समाज में किसी विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सहयोगात्मक रूप से की जाने वाली एक सामूहिक क्रिया है इसका परिप्रेक्ष्य अति व्यापक है। लोक प्रशासन इसमें समाविष्ट है। प्रायतः सभी को यह गलतफ़हमी होती है कि देश के प्रशासन का उत्तरदायित्व केवल राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री तथा जनप्रतिनिधियों का है परन्तु लोकतांत्रिक दृष्टि से देखा जाये तो देश की पूरी शासन व्यवस्था के सुचारू संपादन का उत्तरदायित्व सीधे तौर पर लोक प्रशासन पर होता है।

लोक प्रशासन मुख्यतः सरकार द्वारा निर्धारित शासकीय तथा सार्वजनिक नीतियों के कार्यान्वयन तथा विकास का एक अध्ययन है। यह प्रशासन का वह महत्वपूर्ण अंग है जिससे सरकार द्वारा जनता जनार्दन के लिये निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति होती है। मुख्य रूप से लोक प्रशासन का संबंध उन सरकारी गतिविधियों से है जिनका सीधा प्रभाव जनता पर पड़ता है। सैद्धांतिक रूप से देखा जाये तो लोक प्रशासन का अर्थ "जनसेवा" ही हे जो जनता द्वारा निर्वाचित जनप्रतिनिधियों द्वारा सहयोगात्मक रूप से संपन्न किया जाता है। सही मायने में देखा जाये तो लोक तंत्र में लोक प्रशासन एक शासन पद्धति भी है और जीवन पद्धति भी क्योंकि लोक प्रशासन द्वारा सरकार की तमाम गतिविधियाँ प्रत्यक्ष रूप से जनता की जीवन पद्धति को प्रभावित करता है। वास्तव में पूरी प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने का उत्तरदायित्व लोक प्रशासन पर होता है। अतः किसी भी राष्ट्र के प्रशासनिक व्यवस्था में लोक प्रशासन सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। देश में लोक प्रशासन संपूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था की नींव है। सार्वजनिक अथवा लोक नीतियों के कार्यान्वयन ही लोक प्रशासन को सामान्य प्रशासन से पृथक कर इसे विशिष्ट बनाता है। संप्रति देश की प्रशासनिक व्यवस्था में लोक प्रशासन की भूमिका अधिक व्यापक होती जा

यदि हम मानसिक शांति के बदले में साम्राज्य भी प्राप्त करते हैं तो भी हम पराजित ही हैं।

रही है। इसमें सार्वजनिक तथा लोक नीतियों के निर्माण के साथ साथ इनके प्रभावी कार्यान्वयन के अतिरिक्त समाज में लोकतांत्रिक, नैतिक, व्यापारिक तथा न्यायिक मूल्यबोधों को सुनिश्चित करने का उत्तरदायित्व भी समाहित है।

लोक प्रशासन में पारदर्शिता:

लोकतंत्र के संदर्भ में सांविधानिक अवधारणा को मानें तो यह जनता के लिये, जनता का, और जनता द्वारा व्यवस्थित शासन पद्धति है। इस लोकतांत्रिक संकल्पना ने जनता द्वारा प्रशासन को इस अर्थ में स्पष्ट किया है कि देश के सभी प्रशासनिक गतिविधियों में जनता की सहभागिता को सुनिश्चित किया जाये ताकि देश की शासन व्यवस्था अधिकाधिक पारदर्शी एवं लोकोन्मुख हो कर लोक कल्याण को सुनिश्चित कर सके। हमारी शासन व्यवस्था जितना जनता के करीब होगा उतना ही वह लोकतंत्र के मूलभूत लक्ष्य को प्रास कर सकेगी। पिछले कुछ दशक से हमारी लोक प्रशासन व्यवस्था में कुछ खामियाँ जरूर नजर आई थीं परन्तु अब सरकार देश की शासन व्यवस्था को अधिकाधिक जनोन्मुख एवं पारदर्शी बनाने के संदर्भ में काफ़ी संजीदा हो गयी है। अब लोक हित को सर्वाधिक प्राथमिकता देते हुये लोक प्रशासन व्यवस्था में पारदर्शिता बनाये रखने हेतु सुधार की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इस प्रक्रिया में सभी शासकीय गतिविधियों में जनता की भागीदारी, लोकनीतियों का सरलीकरण, पुलिस तथा न्यायिक प्रक्रिया में सुधार एवं तेजीकरण, स्वास्थ्य तथा कल्याण गतिविधियां, सार्वजनिक सूचना, सहभागिता, पारदर्शिता एवं सेवान्मुखता आदि समाविष्ट हैं। अब सरकार ने लोक कल्याण की भावना को सर्वोपरि मानते हुये एक ऐसी सुशासन व्यवस्था (GOOD GOVERNANCE) की संकल्पना की है जिसमें सभी शासकीय गतिविधियों के लिये आम जनता के प्रति सरकार की जवाबदेही, जनता की सहभागिता, समान अधिकार, भ्रष्टाचार शून्यता एवं सामूहिक विकास को सुनिश्चित किया गया है। अपने भ्रष्टाचार शून्य, लोकोन्मुख तथा पारदर्शी शासन व्यवस्था के महत्वकांक्षी अभियान के चलते सरकार ने पिछले कुछ वर्षों से सूचना का अधिकार, लोक सेवा की गारंटी, ई-प्रशासन की व्यवस्था, ऑनलाइन अभियोग प्रस्तुति की व्यवस्था, नागरिक चार्टर, जैसे कई महत्वपूर्ण तथा कारगर कदम उठाया है।

सूचना का अधिकार नियम के कार्यान्वयन से सरकार के सभी शासकीय गतिविधियों में पारदर्शिता सुनिश्चित होने के साथ साथ इसकी सूचना आम जनता के पास अविलम्ब उपलब्ध होता है। सूचना को घर की दहलीज तक पहुंचाने में यह सरकार का सबसे कारगर प्रयास है। लोक सेवा की गारंटी के कारण समय पर जनता को सेवाएँ उपलब्ध कराने में सहायता मिली है और यह प्रशासन के जवाबदेही को भी सुनिश्चित किया है।

ई-प्रशासन की व्यवस्था के प्रभावी कार्यान्वयन से अत्याधुनिक सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से जनता को सूचना एवं सेवा वितरण में व्यापार रूप से सुधार आया है, साथ ही देश की शासन व्यवस्था में जनता की भागीदारिता में वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त इसके माध्यम से जनता ऑनलाइन पर शिकायत दर्ज करने एवं प्रशासन व्यवस्था के सुधार में अपना महत्वपूर्ण सूझाव प्रस्तुत कर देश की शासन प्रणाली में अपनी प्रत्यक्ष भागीदारी को सुनिश्चित कर सकते हैं।

नारगिक चार्टर, इसके तहत देश के हरेक नागरिक को कोई भी सेवा एक उचित तथा नियत अवधि में प्राप्त करने का अधिकार होगा। इसके अंतर्गत केन्द्र तथा राज्य सरकार के स्तर पर सार्वजनिक शिकायत निपटान आयोग स्थापित किये जाने का प्रावधान है। इस आयोग में शिकायतों के निपटान के लिये एक विशेष अधिकारी होंगे जो शिकायत दर्ज करने एवं उनके शीघ्र निपटान के लिये जनता की सहायता करेंगे।

सरकार द्वारा किये गये इन प्रभावी प्रयासों के कारण हमारी शासन व्यवस्था में काफ़ी सुधार आया है और हमारे प्रशासन तंत्र अधिक पारदर्शी एवं जनोन्मुख बन पाया है। वास्तव में भारत में सदियों से अपेक्षित एक सुशासन व्यवस्था की स्थापना में सरकार के प्रयास अत्यन्त सराहनीय है। ●

अपना वजन न घटाएँ, हमेशा वजन का मतलब मोटापा नहीं होता, प्रतिष्ठा भी होती है।

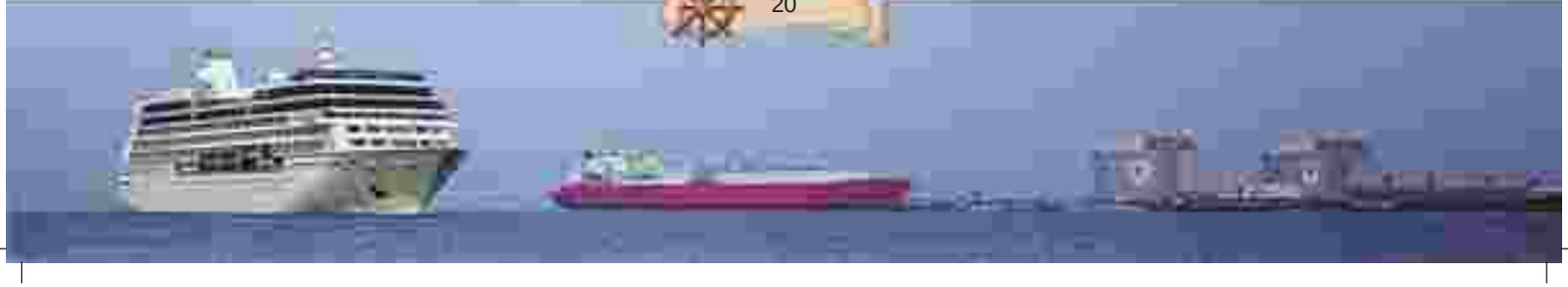

कोचिन पोर्ट में कार वाहकों से तटीय चलन एक आकर्षित रणनीति

जिम्मी जोर्ज
वरिष्ठ उप यातायात प्रबंधक

कोचिन पोर्ट रोल ओन-रोल ओफ (रो-रो) जहाज़ों के माध्यम से उपभोक्ता बाजार में तटीय नौवहन के लिये कार वाहकों यानि परिवहन ओटोमोबाइल को आकर्षित करने के लिये निरंतर प्रयास कर रहा है। 27.09.2016 को कोचिन में पहली बार आने वाले रो-रो कार वाहक जहाज़ एम.वी.ड्रेसडेन इस प्रयास की चरम परिणति है। सर्किट में एन्नोर से कोचिन तक आनेवाले कार वाहक, एन्नोर-कोचिन-कंडला-कोचिन-एन्नोर पूर्व तट में तामिलनाडु एवं भारत के पश्चिमी तट में गुजरात एवं हरियाणा के ऑटोमोबाइल उत्पादन हॉब को जोड़ती है।

आजकल फोर्ड, हुंडई और निसान के लिये पूर्व तट पर चेन्नई, मारुति, होण्डा, फोर्ड एवं टोयाटा के लिये पश्चिमी तट पर मुन्बई एवं मुद्रा के उत्पादन केन्द्रों के करीब बंदरगाहों के माध्यम से भारत से निर्यात होते हैं। उत्पादन केन्द्रों के पास पोर्ट पर बुलाये गये व्यापार मॉडल का कार वाहक इसलिये अच्छा स्थापित किया गया। राष्ट्रीय कार्यक्रम सागरमाला भारत की तटरेखा की क्षमता को बढ़ाकर आर्थिक विकास को तेज करने का लक्ष्य है एवं नदी नेटवर्क इस मॉडेल का समर्थन करता है एवं पोर्ट आधारित उद्योग रणनीति के तहत क्लस्टर प्रस्तुति निर्यात - अभिमुख को प्रोत्साहित करने की सिफ़ारिश किया है।

केरल में कारों का कोई उत्पादन इकाई नहीं है एवं इसलिये कोचिन पोर्ट के निर्यात के लिये कारों के आकर्षण की आशा सीमित है। फिर भी केरल एक मुख्य खपत केन्द्र है, यहां करीब 1,50,000 से 1,80,000 यूनिट तक कारों की वार्षिक बिक्री होती है जो लॉजिस्टिक पैटर्न निर्धारण में काफ़ी महत्वपूर्ण है। भारत में आंतरिक खपत के लिये ऑटोमोबाइल चलन के वर्तमान प्रणाली हमारे भीड़भाड़ सड़कों पर चलने वाली बड़े कार वाहकों से दबा हुआ है एवं केरल कोई अपवाद नहीं है। पर्याप्त मात्रा मे सड़क टैरिफ के 15 से 30% के रूप में कम लागत के साथ यह तटीय परिवहन के सस्ता साधन साबित हो गया है। इसलिए, संभावित तटीय परिवहन बाजार क्षेत्र मजबूत हो सकता है, यदि केरल बाजार के 30% तटीय परिवहन प्रणाली में स्थानान्तरित होता है तो एक वर्ष में 1000 कार प्रति कॉल के साथ 50 जहाज़ों की आवश्यकता होगी। कारों के तटीय चलन को आकर्षित करने हेतु कोचिन पोर्ट की संभावना मुख्यतः गुजरात, हरियाणा और चेन्नई के कारखानों से केरल के कार डिलरों केलिये मारुति एवं हुंडई मायने रखती है।

कार वाहक आमतौर पर काफी कम ड्राफ्ट यानि 9.0 मीटर का होता है एवं केवल बड़े वाहक 10.0 से 10.5 मीटर

हम जिन्दगी में कुछ भी उधार नहीं लेते कफ़न भी लेते हैं तो अपनी जिन्दगी दे कर।

के होते हैं। इसलिए, बंदरगाह संसाधनों पर दबाव निकर्षण के खर्च के मामले में सीमित है।

तटीय कार वाहक आम तौर पर कम बर्थ अधिभोग दरों का होता है एवं अन्य कार्यों में बाधा उत्पन्न किए बिना कोचिन पोर्ट में सहजता से समायोजित किया जा सकता है।

कारों के हस्तन के लिये अत्यधिक स्वच्छ परिवेश एवं उच्च गुणवत्ता युक्त अलग भण्डारण क्षेत्र की आवश्यकता होती है। कार हस्तन करने वाले बंदरगाहों को इस बात का ध्यान रखना होता है कि कार भण्डार यार्ड शुष्क बल्क कार्गो हस्तन टर्मिनल के करीब नहीं होना चाहिये एवं यह आमतौर पर ब्रेक बल्क कार्गो क्षेत्र में होने चाहिये।

कारों का हस्तन अत्यधिक प्रतिष्ठित व्यापार है एवं पर्याप्त मात्रा में इसके हस्तन सडक मार्ग से हजारों ट्रक हटाने एवं इससे उत्सर्जन में बचत के साथ पर्यावरण सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान के अलावा प्रतिवर्ष 3 से 6 करोड़ रुपये आय का एक नियमित स्रोत बन सकता है। ●

जीवन की गलतियाँ

स्नेहा देवराज
सुम्ना, लेखाकार की सुपुत्री

जिंदगी बहुत छोटी है एवं इस सीमित जीवनकाल में दुनिया छोड़ने से पहले मैं इस दुनिया में अपनी छाप छोड़ना चाहता हूँ। जीवन में जोखिम उठाये बिना कोई ऐसा कैसे कर सकता है? किसी भी प्रकार के जोखिम भरे कार्य के सम्पादन में गलतियों का होना स्वाभाविक है परन्तु इसके बाबजूद गलतियों को न दोहराना ही सफलता का रहस्य है। गलती का अफ़सोस न करें, उन्हें सुधारें और निरंतर अपने कार्य करते रहें।

सबसे अच्छे दिमाग भी कार्य निष्पादन में कभी कभी गलतियाँ कर लेते हैं। परन्तु गलतियों को सुधार कर आगे बढ़ने का उनका आत्मविश्वास ही उन्हें मजबूत बनाता है। दूर सितारों से प्रकाश की किरणों की तरह जो एक बार मोड कर सूर्य के निकट पहुंचतें है और फिर सीधे यात्रा करने के लिये अपना मार्ग ढूंढ लेते हैं। हमें भी उन सितारों से प्रेरणा लेनी चाहिये, हमारे जीवन की यात्रा सुगम हो या दुर्गम इसे कैसे पार किया जाये यह फैसला तो हम को करनी है। गलती केवल एक बार हो सकती है, अगली बार इसे न दोहराने के लिये हमारे पास ढ़ेरों विकल्प होंगें। समझदार तो वे होतें हैं जो गलती करने पर उससे कुछ सीख हासिल कर लेते हैं। बुद्धिमान तो वह हैं जो अत्यधिक सावधान रहते हैं और दूसरों की गलतियों से सीखते हैं। मैं बुद्धिमानी को पसंद करता हूँ और आप

"जिस किसी ने कभी कोई गलती न की हो उसने कभी कोई नया करने की कोशिश नहीं की होगी।" अल्बर्ट आइंस्टीन।

अगर आपके रास्ते में कोई समस्या नहीं आ रही है तो समझ लीजिये कि आप गलत रास्ते में जा रहे हैं।

डायबिटीज नई पीढ़ी का सबसे बड़ा आतंक

डॉ. के. आई. मुतुकोया
वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी

जब मैं डायबिटीज रोग के बारे में सुनता हूं मेरे दिल में एक ऐसे गुण्डा जो का भय छा जाता है जो मेरी जीवन यात्रा में किसी भी समय मुझे हमला करने की प्रतिक्षा में है। आज डायबिटीज एक लाइलाज बीमारी है जो देश भर में किसी भी आयु, लिंग, वर्ग, प्रांत और किसी भी स्थिति के लोगों को हो सकता है।

डायबिटीज विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं (1) डायबिटीज मेलीटस सबसे आम (2) जन्म से ही बच्चों में जुवेनाइल डायबिटीज पाया जाता है (3) गर्भवती महिलाओं में जेस्टेशनाल डायबिटीज पाया जाता है (4) डायबिटीज इनसिपिडस किडनी के रिसाव के कारण मूत्र में शर्करा की मात्रा में वृद्धि की विशेषता है।

सबसे अधिक पाये जाना वाला डायबिटीज जिसका हम आम तौर पर जिक्र किया करते हैं वह डायबिटीज मेलीटस का पहला समूह है। इंसुलिन के अप्रभावी उपयोग अथवा अग्न्याशय में इंसुलिन हार्मोन की कम स्राव के कारण रक्त में शर्करा की मात्रा सामान्य मात्रा से अधिक परिमाण से जम जाता है। शर्करा के संचित मात्रा से रक्त का घनत्व बढ़ जाता है जो शरीर के कई अंग एवं रक्तवाहिकाओं को नष्ट कर देता है। इसके अलावा यह विभिन्न प्रकार के किटाणुओं के फैलाव के लिये अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करता है।

एक लम्बे अर्से तक रक्त में संचित शर्करा रहने से यह आँखों में रेटिना, किडनी में नेफ्रोन, दिल में रक्त वाहिकाओं (कोरोनरी धमनियों) और वॉल (मायोकार्डियम) एवं पैरों में रक्त वाहिकाओं को प्रतिकुल रूप से प्रभावित करता है। इससे कम दृष्टि, किडनी खराब होना, हृदयघात, पैरों में अल्सर (जिससे पैरों में शल्य चिकित्सा की घटना भी आम नहीं है) जैसी जटिलताएँ पैदा होती हैं। अक्सर यह भी देखा गया है कि यह कोलेस्ट्रोल के संभावित संचय का एक प्रमुख कारण होता है।

चूँकि आनुवंशिक रूप से इस रोग के पाये जाने की संभावना अधिक होता है यदि माता-पिता में से किसी एक या दोनों को यह बीमारी है फिर मीठा पेय एवं मिठाई से परहेज़ करने में कोई गलती नहीं है। स्वस्थ खानें की आदतों द्वारा इस रोग को काफ़ी हद तक रोका जा सकता है। जब मेरे दो मरीज़ मुझ से यह कहने लगे कि वे अपने

जब आप गुजरते समय का अफ़सोस कर रहे होते हैं उस समय भी वक्त गुजर रहा होता है।

घरों में कभी शकर नहीं खरीदा तब मैंने उनसे कहा कि "आप जैसे लोग इस समाज के लिये मार्गदर्शक हैं"। हमारे समाज में ऐसे लोगों का होना वास्तव में बेहद खुशी की बात है। मैंने भी उनसे मजाक में एक और बात यह कहा कि "यदि मैं कभी मंत्री बनूंगा तो मैं शराबखानों पर पाबंदी लगाने के साथ बेकरी दूकानों पर भी पाबंदी लगा दूंगा।"

एक ऐसे समाज को इस बात कहने की जरूरत नहीं जहां ज्यादातर लोग रोकथाम से ज्यादा इलाज पसंद करते हैं। रक्त में शर्करा की अचानक कमी को हाइपोग्लाइसीमिया कहा जाता है जो रक्त में शर्करा की अधिक मात्रा से भी ज्यादा खतरनाक है क्योंकि यह मास्तिष्क में स्थाई नुकसान जैसे अचानक समस्याएँ यहाँ तक कि मौते का कारक भी हो सकता है। यह खतरनाक स्थिति सामान्यतः मधुमेह के इलाज के लिए इस्तेमाल किये गये दवाओं के कारण होता है, (यद्यपि आज कल तैयार किये जा रहे गोलियाँ और इन्सुलिन हाइपोग्लाइसीमिया का कारक नहीं होते पर वे बहुत महंगे होते हैं।) इसके अतिरिक्त यह प्रकृति का एक नियम है कि सभी दवाइयों का एक प्रतिकुल असर रहता है। इसके बावजूद कुछ दवाइयाँ अंगों के क्रियाशीलता को ध्यान में रख कर दिये जाते हैं। ऐसे मामलों में इन्सुलिन का प्रयोग किया जा सकता है। इसके अलावा यह भूख और शरीर का भार बढ़ाते हैं। वास्तव में नई किस्म की गोलियां एवं इन्सुलिन हाइपोग्लाइसीमिया के बहुत कम प्रभाव डालते हैं जो हमें उनकी ऊंची कीमतों को नजरअंदाज करने पर मजबूर कर देते हैं। बाजार में उपलब्ध नवीनतम गोलियों की खास बात यह है कि यह मूत्र के द्वारा रक्त से शर्करा को निकाल देती है। गोली के सेवन के कारण मूत्र में शर्करा की मात्रा बहुत अधिक हो जाता है। अतः यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि उन्हें आजीवन उपचार की आवश्यकता है और इसके लिये यथा साध्य अधिकाधिक समय व्यायाम एवं नियंत्रित आहार अनिवार्य है, जो सबसे बुद्धिमानी, परिपक्व एवं सस्ती इलाज है। अन्यथा डॉक्टर द्वारा दवाइयों एवं इन्सुलिन की लंबी सूची तैयार करवाना ही एक विकल्प उपाय होगा।

दूसरे समूह-जुवेनाइल डायबिटीज

कुछ असाधारण मामलों में बच्चे उनके शरीर में इन्सुलिन के बिना ही पैदा होते हैं। ऐसे में बीमारी की स्थिति को ध्यान में रखते हुये इंसुलिन पम्प जैसे उपायों को एकबार, दो बार, तीन बार एवं लगातार प्रयोग किया जा सकता है।

तीसरे समूह-जेस्टेशनल डायबिटीज

यह आमतौर पर गर्भावस्था के दौरान महिलाओं में पाया जाता है। हालांकि यह बहुत कम लोगों में पाया जाता है। ज्यादातर लोगों में यह प्रसव के बाद गायब हो जाता है। यहां भी इंसुलिन एक उपचार है। ऐसे में वजन और भ्रूण के आकार में वृद्धि होने की संभावना है।

चौथे समूह-इनसिपिडस डायबिटीज

इस समूह का आम डायबिटीज के साथ किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं है। यहाँ गुर्दे में रिसाव के वजह से मूत्र में शर्करा की ऊंची मात्रा पाया जाता है। परन्तु रक्त में शर्करा की वृद्धि नहीं होती।

हमेशा बुद्धिमानी से अपनी जिंदगी जीयें एवं बीमारियों को अपने से दूर रखें। ●

सहनशीलता के अभ्यास में किसी का शत्रु ही उसका बेहतर और परम मित्र हो सकता है।

सामुद्रिका भवन में सामूहिक योगाभ्यास

सम्मेलन कक्ष में स्वच्छ भारत अभियान का शपथ ग्रहण

संयुक्त सचिव (पत्तन) की उपस्थिति में 'ओणम' समारोह

माननीय केन्द्रीय मंत्री वेंकया नाइडु द्वारा स्वच्छाग्रह कार्यक्रम का शुभारंभ

कोचिन पोर्ट के अध्यक्ष माननीय केंद्रीय पोत परिवहन मंत्री से पुरस्कार स्वीकार करते हुए

अध्यक्ष द्वारा पोर्ट अस्पताल का नवीकृत अधिकारी वार्ड का उद्घाटन

कोरियन महा परामर्शदाता के साथ उच्चस्तरीय बैठक

एन.टी.आर.ओ. कार्यकर्ताओं के साथ बैठक

संसदीय समिति के निरीक्षण के दौरान अध्यक्ष द्वारा आईसीटीटी परियोजना का प्रदर्शन

पर्यटन, संस्कृति पर विभाग संबंधी संसदीय समिति का निरीक्षण

राज्यसभा के पटल पर रखे गये कागजात संबंधी संसदीय समिति का निरीक्षण

संसदीय रा.भा. समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा राजभाषायी निरीक्षण

नराकास के संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागी

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन कोचिन पोर्ट के अध्यक्ष

नराकास के संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा समारोह में दौरान कोचिन पोर्ट की गृह पत्रिका 'कोचिन लहर' को पुरस्कार

सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2015 के पालन पर रिपोर्ट

बैनरों और पोस्टरों का प्रदर्शन

कर्मचारियों में सतर्कता संबंधी जानकारियों की अभिवृद्धि के लिये कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में 26-10-2015 से 31-10-2015 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस अभियान को व्यापकता प्रदान करते हुये कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के वांर्फो, कंटेनर फ्रेट स्टेशन, समुद्री भवन, अस्पताल एवं वित्त विभाग के कार्यालय भवन जैसे अहम जगहों में उद्देश्य एवं संदर्भ दर्शाते बैनरों का प्रदर्शन किया गया।

उद्घाटन कार्यक्रम

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री जी.सेंथिलवेल द्वारा पारम्परिक समारोह दीप प्रज्वलन के साथ दिनांक 26.10.2015 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह का उद्घाटन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस उद्घाटन कार्यक्रम में विभाग प्रमुखों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

सतर्कता शपथ

प्रशासनिक कार्यालय में कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री जी.सेंथिलवेल द्वारा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सतर्कता शपथ दिलाया गया। इस शपथ पत्र को पोर्ट के सभी विभागों / प्रभागों में सभी कर्मचारियों के सम्मुख पढ़ा गया।

प्रतियोगिताएँ

इस अवसर पर पोर्ट कर्मचारियों के बीच निबंध लेखन एवं भाषण प्रतियोगिताएँ क्रमशः 26.10.2015 एवं 29.10.2015 को आयोजित किया गया। दिनांक 27, 28 एवं 29.10.2015 को विल्लिंगडन आईलण्ड स्थित सरकारी उच्च विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में विद्यालय के छात्रों के लिये निबंध लेखन एवं पोस्टर डिजाइन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिये दिनांक 28.10.2015 को निबंध लेखन एवं भाषण प्रतियोगिताओं

यदि आप सही हैं तो आपको गुस्सा होने की आवश्यकता नहीं, यदि आप गलत हैं तो आपको गुस्सा होने का अधिकार नहीं है।

का भी संचालन किया गया। इस संदर्भ में पोर्ट ट्रस्ट के कर्मचारीगण एवं विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की प्रतिक्रिया काफ़ी उत्साहप्रद रहा।

समापन समारोह

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट, प्रशासनिक भवन के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 30.10.2015 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2015 का समापन समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह में सभी विभाग प्रमुख, कर्मचारिगण एवं केन्द्रीय विद्यालय, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट व विल्लिंगडन आईलण्ड स्थित सरकारी उच्च विद्यालय एवं निकटस्थ महाविद्यालयों के विद्यार्थीगण भी उपस्थित थे। पोर्ट के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री आर. रामकृष्णन, आईएएस स्वागत भाषण दिया एवं पोर्ट के अध्यक्ष श्री पोल आन्टणी, आईएएस संगठन में सतर्कता की भूमिका पर प्रकाश डालते हुये समारोह को सम्बोधित किया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री के.के. विजयकुमार, आईएएस (सेवानिवृत) ने "सार्वजनिक जीवन में नैतिकता" पर सारगर्भक भाषण दिया।

मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में जनता, समाज एवं राष्ट्र के कल्याण के लिये सार्वजनिक जीवन में नैतिकता के अनुसरण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने जीवन में सादगी अपनाने एवं महात्मा गाँधी एवं लालबहादूर शास्त्री जी को अपना आदर्श बनाने का परामर्श दिया। मुख्य अतिथि द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

सतर्कता अनुभाग

वृक्ष

श्रीमती तिबिना, वरिष्ठ लेखाकार की सुपुत्री

इस भूमि को सुरक्षित रखे न
इस धरती को सांस देने
तुम ही हो, मेरे वृक्ष।
बड़ा सा वृक्ष - छोटा सा वृक्ष
क्या भी हो, किसी भी हो
तुम देते हो हमें।
इस पृथ्वी पर जीने के लिए सांस।
हमने क्या क्या किया,
तुम्हें लगाने को,
हमने, इस मनुष्य ने
क्या क्या किया
तुम्हें निकालने को
यही रक्षक को, निकालने को
जिन्होंने हमें दिया
एक सुंदर वृथ्वी।
पर तुम हमेशा कराते हौ
हमसे प्यारा।
हमारे रक्षक रहते हो
चाहे हम कोई भी हो
या किसी रूप में।
देते हो तुम तुम्हारे शरीर
जब हम चाहते थे।
देते तो तुम तुम्हारे फल
जब हम तुम्हें चाहते हैं।
क्यों करते तो, तुम हमसे
इतना प्यार।
हमको, यानी इस मनुष्य को
जिसने नहीं देखा हो
तुम्हारा प्यार।
अगर तुम नहीं होते
तो हम नहीं होते
मेरे वृक्ष, मेरे प्यारे वृक्ष
धरती के रखवाला
मेरा वृक्ष।

रितिका राजेश

मनुष्य धन कमाने के लिये अपना स्वास्थ्य गवां बैठता है और स्वास्थ्य वापस पाने के लिये धन गवां बैठता है।

घर में प्लास्टिक जलाने से स्वास्थ्य पर खतरनाक प्रभाव

अजयकुमार
सुरक्षा अधिकारी

दुनिया में अधिकतर लोग प्लास्टिक के कचरे को घर में जलाने के अपने अभ्यास उनके स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिये कितना हानिकारक है, इससे बेखबर रहते हैं और अपने उस अभ्यास को जारी रखते हैं। हाल के शोध से पता चलता है कि घर के पिछवाड़े कचरे को जलाना हमारे स्वास्थ्य के लिये हमारे अज्ञानता से भी ज्यादा खतरनाक है। इस प्रकार के जलन से निम्नस्थ की जोखिम बढ़ जाती है।

1. कैंसर
2. (हृदय रोग) दिल की बीमारी
3. अस्थमा और वातस्फीति जैसे श्वसन वृद्धि
4. खुजली
5. अरुचि एवं सिर दर्द
6. तंत्रिका तंत्र में नुकसान
7. किडनी या लीवर में नुकसान
8. प्रजनन तंत्र में प्रभाव और नुकसान
9. विकलांग संतान

घर के परिसर में जलने वाले मुख्य प्लास्टिक हैं।

1. फोम कप
2. मांस का ट्रे
3. अंडे कंटेनर
4. दही और वितरण कंटेनर
5. प्लास्टिक की थैलियाँ

उपर्युक्त पॉलीस्टीरीन पॉलिमर के जलने से स्टैरीन गैस निर्गत होता है।

1. त्वचा और फेफड़ों के द्वारा ये आसानी से अवशोषित हो सकते हैं।
2. उच्च सांद्रता वाष्प आंखें और श्लेष्मा झिल्ली को नुकसान पहुंचा सकते हैं।
3. स्टैरीन गैस के लम्बे समय तक उत्सर्जन (1) प्रमुख तंत्रिका तंत्र (2) सिर दर्द, थकान, कमजोरी और अवसाद के कारण हो सकते हैं।

इसके अलावा जो लोग कचरे जला रहे हैं, वे सीधे तौर पर अपने पड़ोसियों, बच्चों, प्रदूषकों के परिवार के साथ प्रदूषकों को प्रोत्साहन दे रहे हैं।

प्लास्टिक के जलने से डाइओक्सिन का उत्सर्जन

अर्गानोक्लोरिन युक्त पीवीसी जैसे पदार्थ या प्लास्टिक के जलन सबसे खतरनाक उत्सर्जन की एक अहम वजह हो सकता है। जब इस तरह के प्लास्टिक जलते हैं, डाइओक्सिन

खुशनसीब वह नहीं जिसका नसीब अच्छा है, खुशनसीब वह है जो अपनी नसीब से खुश है।

के हानिकारक मात्राएँ (अत्यधिक जहरीले रसायनों का एक समूह) छोड़े जाते हैं। ये मानव जाति के लिये सबसे जहरीले होते हैं एवं (1) कैंसर (2) हर्मोन विभाजक एवं लगातार (3) शरीर में चर्बी जमा करता है एवं इस प्रकार गर्भनाल के माध्यम से माँओं से सीधे उनके बच्चों में स्थानान्तरण होता है डाईओंक्सिन हमारे फ़सलों एवं हमारे जलों में होते हैं एवं हमारे खाद्यों में स्थानान्तरण होते हैं, हमारे शरीर में जमा हो जाते हैं एवं फिर वह हमारे बच्चों में संचारित हो जाते हैं।

प्लास्टिक एवं कचरे का जलन

दुनिया भर में कचरे को घर में जलाना एक आम बात है। खास कर ग्रामीण क्षेत्रों में कचरे के जलन में 1) कागज़ 2) कार्ड बोर्ड 3) खाद्य का जूठन 4) प्लास्टिक आदि शामिल है इस प्रकार के जलन से निर्गत उत्सर्जन सीधे घर एवं पर्यावरण और पारिस्थिति की तंत्र को प्रभावित करता है।

लोग क्यों अपने प्लास्टिक और अन्य कचरे को जलाते हैं।

दुनिया भर में कचरे को घर के पिछवाड़े एवं परिसर के मध्य प्लास्टिक एवं अन्य कचरे को जलाना एक आम बात है। प्लास्टिक जलाने के कारण के पीछे ये वजह हो सकते हैं।

1. स्थानीय कचरे निपटान क्षेत्र तक ले जाने की तुलना में आसान।
2. नियमित कचरा संग्रहण सेवा हेतु भुगतान करने से बचना
3. नगर निगम के कचरे सेवा की अनुपलब्धता
4. एक कम आर्थिक स्तर के साथ आंतरिक प्लास्टिक जलाने का अभ्यास किया जाता है एवं लोग खुद प्लास्टिक को जलाने तथा उबालने के लिये स्टोव का इस्तेमाल करते हैं।

इसके अलावा कई प्लास्टिक बड़े आसानी से जल जाते हैं और कइयों जलने के लिये उच्च क्षमता के ऊर्जा की आवश्यकता होती है यदि स्टोव प्लास्टिक को अच्छी तरह से जला देते हैं तो इससे महंगी लकड़ी की बचत होती है और कचरे की मात्रा कम हो जाती है।

प्लास्टिक और अन्य कचरे के जलने से पर्यावरण को क्षति पहुचती है कैसे?

प्लास्टिक अपशिष्ट जलने के दौरान प्रदूषक निर्गत होते हैं एवं छोटी एवं लम्बी दूरी तक हवा के माध्यम से संचारित होते हैं।

ये भूमि, वनस्पतियों एवं जलाशयों में जमे जाते हैं। पारद, पोंलीक्लोरिनेटेड़ बॉयफीनाइल्स (पीओबीएस), डाई ओक्सिन एवं फुरान जैसे कुछ प्रदूषक लंबे समय तक, पर्यावरण में बने रहते हैं एवं इनमें जैवसंचयन की प्रवृत्ति पाये जाते हैं। आमतौर पर प्रदूषकों के जैवसंचयन दूषित हवा में सांस लेने से ज्यादा दूषित पानी और भोजन (दूषित मछली मांस डायरी उत्पादों आदि है। जैवसंचित सामग्रियों के निरंतर प्रयोग निम्नलिखित के कारक हो सकते हैं।

1. कैंसर
2. विकृत संतान
3. प्रजनन विफलता
4. प्रतिरक्षा रोग
5. सूक्ष्म न्यूरो-स्वभावजन्य प्रभाव

लोग क्या कर सकते हैं?

प्लास्टिक का पृथकीकरण-अन्य कचरे से प्लास्टिक कचरे को अलग करें अपने आंगन अथवा घर में किसी भी प्लास्टिक को न जलायें।

प्लास्टिक से परहेज़ करें-प्लास्टिक से परहेज करें, विशेष रूप से पीवीसी पैकेज में पैक किये गये वस्तु न खरीदें जिसे जलाते समय डाइओक्सिन निकलता हो।

कचरा कम करें-ऐसे उत्पाद खरीदें जिसका पुनःउपयोग किया जा सके जैसे कि (ग्लास और धातु के बरतन)

पुनः प्रयोग -अपनी नगरपालिका को कागज़, ग्लास एवं धातुओर के पुनः प्रयोग की व्यवस्था करने की मांग करें।

निर्माताओं के प्लास्टिक लौटाएँ-अपने प्लास्टिक कचरों को दुकान में वापस लायें और इसके पुनः प्रयोग हेतु इसे निर्माता को वापस करें।

अपने बगीचे अथवा अपने धर में प्लास्टिक न जलायें।

●

स्वच्छता अभियान चलाने से अच्छा तो यह है कि हम गंदगी ही न फैलायें।

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में सुरक्षा सप्ताह समारोह - 2016

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस/ससाह समारोह के एक अंश के रूप में कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में 4 से 10 मार्च, 2016 विभिन्न कार्यक्रमों के साथ उपर्युक्त समारोह मनाया गया।

पोर्ट एवं डॉक परिसर के अहम जगहों में सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के महत्व को दर्शाते बैनरों एवं पोस्टरों का पर्दर्शन किया गया और पोर्ट कर्मचारियों, गोदी मज़दूरों एवं जनता के बीच व्यापक रूप से संचारित किया गया।

4 मार्च शुक्रवार को पूर्वाह 11.00 बजे एरणाकुलम वार्फ में कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री जी. सेंथिलवेल द्वारा सुरक्षा ध्वज फ़हराया गया। ध्वजारोहण समारोह के पश्चात उन्होंने सुरक्षा शपथ दिलाया। समारोह के दौरान वरिष्ठ अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं मज़दूर उपस्थित थे उसी समय कोचिन पोर्ट परिसर के विभिन्न जगहों में भी सुरक्षा शपथ लिये गये। उसी दिन 13.30 बजे एरणाकुलम वार्फ़ के कॉल स्टेण्ड में एक बैठक का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में अधिकारीगण एवं गोदी मज़दूरगण भी भाग लिये।

समारोह के एक अंश के रूप में परवर्ती दिनों में पोर्ट कर्मचारियों के बीच सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण से संबंधित विषय पर निबंध लेखन, भाषण एवं प्रश्नोत्तरी जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इसके अतिरिक्त कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के वैद्युतीय परीक्षण एवं मरम्मत अनुभाग में मौलिक अग्निशमन तकनीकी पर एक जागरूकता कार्यक्रम संचालन किया गया।

10 मार्च 2016 को प्रशासनिक भवन के सम्मेलन कक्ष में कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के चिकित्सा अधिकारी डॉ ए.पी.सुधीर द्वारा "जीवन शैली बीमारियों" पर एक प्रस्तुति उपस्थापन किया गया।

10 मार्च को आयोजित समापन समारोह की बैठक में श्री सरोज कुमार दास, मुख्य यात्रिक अभियंता, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट ने अध्यक्षता की एवं श्री जिम्मी जोर्ज, वरिष्ठ उप यातायात प्रबंधक ने स्वागत भाषण दिया। बैठक के मुख्य अतिथि श्री पोल आन्टणी, आईएएस अध्यक्ष, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट ने सुरक्षा संदेश दिया। उन्होंने समारोह के दौरान आयोजित विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया। श्री जी. सेंथिलवेल, उपाध्यक्ष, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट ने बधाई भाषण दिया। सभी विभाग प्रमुख, वरिष्ठ पदाधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं मज़दूरों ने समारोह में भाग लिया। श्री अजय कुमार, सुरक्षा अधिकारी ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद अर्पण किया।

सुरक्षा अधिकारी

समय तब तक दुश्मन नहीं बनता जब तक आप उसे व्यर्थ गंवाने का प्रयास नहीं करते।

वर्ष 2015-16 के दौरान क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों पर रिपोर्ट

वि.ओ.सी. पोर्ट ट्रस्ट, तुतुकुड़ी में 07 से 10 जनवरी, 2016 तक आयोजित अखिल भारतीय महापत्तन एथ्लेटिक प्रतियोगिता में श्री के.जे. जोयसन, वरिष्ठ लेखाकार, वित्त विभाग ने पुरुष संवर्ग में 400 मीटर में रजत पदक एवं 800 मीटर एवं 5000 मीटर में स्वर्ण पदक जीता।

पारादीप पोर्ट ट्रस्ट द्वारा 29 जनवरी से 3 फरवरी, 2016 तक आयोजित अखिल भारतीय महापत्तन फुटबल प्रतियोगिता में हमारी टीम ने भाग लिये।

कण्डला पोर्ट ट्रस्ट द्वारा 9 से 11 फरवरी 2016 तक आयोजित अखिल भारतीय महापत्तन सांस्कृतिक सम्मेलन में हमारी टीम ने ड्रामा, ग्रूप म्यूजिक एवं इंस्ट्रूमैटल म्यूजिक में भाग लिया।

कामराजर पोर्ट लि., चेन्नाई द्वारा 17 से 19 मार्च, 2016 तक आयोजित अखिल भारतीय महापत्तन शटल बैडमिंटन प्रतियोगिता में हमारी टीम ने फाइनल में विशाखपट्टनम् पोर्ट को हराकर चैम्पियनशिप जीता।

श्री जोय टी. आन्टणी, वरिष्ठ लेखाकार, सामान्य प्रशासन विभाग ने ओपन मेन्स सिंग्ल्स इवेंट में स्वर्ण पदक जीता एवं उन्होंने श्री दीपक अमरनाथ, वरिष्ठ लेखाकार, वित्त विभाग को साझेदार बनाते हुये ओपन मेन्स डबल्स इवेंट भी जीता।

श्री जोय टी आन्टणी ने हेलसिंगबर्ग, स्वीडेन में 20 से 26 सितम्बर, 2015 तक आयोजित वरिष्ठ विश्व चैम्पियनाशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया एवं मेन्स डबल्स में शीर्ष 16 में पहुंच गये। उन्होंने 1 से 6 मार्च 2016 तक कोयन्बतूर में आयोजित मास्टर्स शटल बैडमिंटन के सिंगल्स में नेशनल टाईटल जीता है।

चेन्नई पोर्ट ट्रस्ट में 28 से 30 मार्च, 2016 तक आयोजित अखिल भारतीय महापत्तन वोलीबल एवं बीच वोलीबल प्रतियोगिता में हमारी टीम ने दोनों प्रतियोगिताएँ जीता है।

सामान्य प्रशासन विभाग के वरिष्ठ लेखाकार श्री के अब्दुल नाज़र केरल स्टेट सीनियर मेन बोलीबल टीम के कोच रहे थे जिसने बंगलूरु में 2 से 10 जनवरी, 2016 तक आयोजित सीनियर नेशलन वोलीबल चैम्पियनशिप में रजत पदक जीता था। वे केरल स्टेट बीच वोलीबल वुमन टीम के भी कोच थे 3 से 5 मार्च, 2016 तक कोषिकोड में आयोजित सीनियर नेशनल चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीता ।

क्रीड़ा निरीक्षक

शटल बैडमिंटन के क्षेत्र में उपलब्धियाँ

1. वर्तमान अखिल भारतीय महापत्तन सिंगल्स, डबल्स में इंडिविजूइल चैम्पियन एवं अखिल भारतीय महापत्तन चैम्पियनशिप 2016 में स्वर्ण पदक जीते कोचिन पोर्ट टीम के कप्तान।
2. कोचिन पोर्ट में ज्वाईन करने के बाद अखिल भारतीय महापत्तन चैम्पियनशिप में 30 टाईटल्स एवं 30 स्वर्ण पदक प्रास किया है।
3. कोयम्बतूर में वर्ष 2016 में आयोजित अखिल भारतीय मास्टर्स राष्ट्रीय बैडमिंटन चैम्पियनशिप में सिंगल्स में राष्ट्रीय चैम्पियन।
4. स्वीडेन में वरिष्ठ विश्व बैडमिंटन चैम्पियनशिप में भारतीय टीम को प्रतिनिधित्व किया।

जोय टी. आन्टणी, वरिष्ठ लेखाकार

यह वक्त भी गुज़र जायेगा, एक ऐसा वाक्य है जो खुशी में गम और गम में पढ़ने पर खुशी देती है।

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी रिपोर्ट - 2016

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

हर तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक नियमित रूप से आयोजित की जाती है।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का पूर्णतः अनुपालन किया जाता है।

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण

11 जनवरी 2016 को संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति ने कोच्ची नराकास उपक्रम सदस्य कार्यालय के रूप में - कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के साथ विचार विमर्श किया।

हिन्दी प्रशिक्षण

हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन कर्मचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण के लिए नामित किया जाता है। सर्वाधिक अंकों के साथ प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण होने वाले कर्मचारियों को राजभाषा विभाग द्वारा यथा निर्धारित नकद पुरस्कार, 12 महीने के लिये एक वेतन वृद्धि एकमुश्त प्रदान की जाती है। तकनीकी कर्मचारियों को भी हिन्दी में प्रशिक्षण दी जाती है। कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा जनवरी 2016 से शुरू नया हिन्दी पारंगत पाठ्यक्रम के लिए कर्मचारियों को नामित किया गया। इसकी परीक्षा मई 2016 में भारत सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत काक्कनाड में चलाई गई। सभी नामित कर्मचारी अच्छे अंकों के साथ परीक्षा उत्तीर्ण हुए।

इसके अतिरिक्त कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा जुलाई 2016 से शुरू हुई हिन्दी प्राज्ञ पाठ्यक्रम के लिए कर्मचारियों को नामित किया गया। इसकी परीक्षा नवंबर 2016 में चलायी जाएगी।

11 दिसंबर, 2015 को बी.पी.सी.एल- के आर, नगर कार्यालय, मरडु में कोच्ची टोलिक द्वारा आयोजित राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम में श्री. मानस रंजन त्रिपाठी, हिन्दी अनुवादक और श्रीमती. एस. राजलक्ष्मी, अवर श्रेणी लिपिक ने भाग लिया।

कोचिन शिपयार्ड द्वारा दिनांक 3-2-2016 को आयोजित राजभाषा संगोष्ठी में सहायक सचिव ग्रेड। (रा भा), हिन्दी अनुवादक एवं वरिष्ठ लेखकार ने भाग लिया।

ठोकर से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला विद्यालय आज तक संसार में नहीं खुला।

19-2-2016 को आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (दक्षिण-दक्षिण-पश्चिम) में श्री. पोल आंटणी, आई ए एस, अध्यक्ष, सहायक सचिव ग्रेड । (रा भा), हिन्दी अनुवादक एवं हिन्दी अनुभाग में तैनात निम्न श्रेणी लिपिक ने भाग लिया।

श्री. जी. सेंथिलवेल, अध्यक्ष (प्रभारी), श्रीमती. सूसन वर्गीस, सहायक सचिव ग्रेड I (रा.भा) एवं श्री मानस रंजन त्रिपाठी, हिन्दी अनुवादक ने 25-5-2016 को बी.एस.एन.एल भवन में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नरकास) कोचिन (उपक्रम) की 16 वीं बैठक में भाग लिया।

संयुक्त हिन्दी पखवाडा-कोच्ची टोलिक (उपक्रम)

बीएसएनएल भवन में 22-3-2016 को संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह (कोच्ची टोलिक - पीएसयू) आयोजित किया गया। इस दौरान हमारे कार्यालय को प्राप्त पुरस्कार निम्नवत है।

1. संयुक्त हिन्दी पखवाडा के दौरान आयोजित हिन्दी फिल्म गीत (पुरुष वर्ग) प्रतियोगिता में श्री.बलराम, सचिव का वैयक्तिक सहायक को द्वितीय पुरस्कार।
2. संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित तस्वीर क्या बोलती है कहानी प्रतियोगिता में श्रीमती. यू के रूबी, निम्न श्रेणी लिपिक को सांत्वना पुरस्कार।

3. राजभाषा कार्यान्वयन के लिए तृतीय पुरस्कार।
4. गृह पत्रिका कोचिन लहर के लिए तृतीय पुरस्कार।

हिन्दी पखवाड़ा - 2015

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में 14 से 28 सितंबर 2015 को हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस क्रम में अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिन्दी गीत, अंताक्षरी, कठितापाठ, हिन्दी में प्रशासनिक शब्दावली एवं टिपपण व प्रारूपण, भाषण, वाचन प्रतियोगिता, पैराग्राफ-श्रुत लेखन आदि प्रतियोगिताएं चलाई गई। कर्मचारियों के बच्चों के लिए भी हिन्दी गीत, भाषण आदि प्रतियोगिताएं चलाई गई।

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किए गए। एसएसएलसी/ सीबीएसई (10 वीं) कक्षा एवं 12 वीं कक्षा के हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवाले पोर्ट कर्मचारियों के बच्चों को नकद पुरस्कार

आपके सपने सच हो सकते हैं। अगर आप में उन्हें पाने की कोशिश में लगे रहने का हौंसला हो।

एवं प्रमाण पत्र दिए गए। हिन्दी में नोटिंग/ड्राफ्टिंग के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार दिए गए। हिन्दी पखवाड़ा के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवाले सचिव का कार्यालय को "चल वैजयंती पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।

दिनांक 15-10-2015 को हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया। श्री. पोल आन्टणी, आईएएस, अध्यक्ष, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट इस समारोह के मुख्य अतिथि रहे। श्रीमती. गौरी एस. नायर सचिव तथा राजभाषा अधिकारी ने इस समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती. सूसन वर्गीस, सहायक सचिव ग्रेड - 1 (राजभाषा) ने स्वागत भाषण दिया। श्रीमती. गौरी एस. नायर, ने अध्यक्षीय भाषण तथा श्री. जी. सेंथिलवेल

उपाध्यक्ष ने बधाई भाषण दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद श्री मानस रंजन त्रिपाठी, हिन्दी अनुवादक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने हमारी गृह पत्रिका "कोचिन लहर" का विमोचन किया एवं उपाध्यक्ष ने राजभाषा संदर्शिका का विमोचन किया।

राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र

वर्ष 2012-13 के दौरान राजभाषा के उत्कृष्ठ कार्यान्वयन के लिए कोचिन पोर्ट ट्रस्ट को पोत परिवहन मंत्रालय द्वारा प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 6 जनवरी, 2016 को नई दिल्ली के संसदीप सौध में पोत परिवहन मंत्रालय द्वारा आयोजित हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक में माननीय पोत परिवहन मंत्री ने कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष को राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

हिन्दी वेब साइट

कार्यालय के वेबसाइट का द्विभाषीकरण कार्य प्रगति पर है।

"कोचिन लहर" - हिन्दी गृह पत्रिका

हर साल हिन्दी गृह पत्रिका "कोचिन लहर" का विमोचन किया जाता है। अधिकारी/कर्मचारी/उनके बच्चे एवं परिवार सदस्यों से प्राप्त लेखन सामग्री/कार्टून्स/तस्वीर/यात्रा विवरण/

कर्म को ही अपना परिचय बना लें, नाम की आवश्यकता नहीं रहेगी।

कविता आदि का प्रकाशन किया जाता है। कोचिन लहर में प्रकाशित सभी लेखों के लेखकों को हिन्दी पखवाड़ा के समापन समारोह के अवसर पर सम्मानित किया जाता है।

हिन्दी कार्यशाला

कर्मचारियों को कार्यालयीन गतिविधियों में हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कराने हेतु नियमित रूप से हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता हैं।

राजभाषा नियम, विनियम, फाइल एवं रजिस्टरों में टिप्पण एवं आलेखन तथा रजिस्टरों एवं सेवा पंजियों में प्रविष्टियाँ, कार्यालयीन गतिविधियों में टिप्पण और प्रारूपण विधा संबंधी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है।

बोलचाल के हिन्दी संबंधी कार्यशालाएं।

कंप्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग संबंधी कार्यशाला।

हिन्दी कार्यशाला के समापन दिवस में कर्मचारियों की दक्षता को प्रोत्साहित करने के लिए विविध प्रतियोगिताएं संचालित की जाती है।

प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाता है।

कार्यशाला के अंत में उपस्थित कर्मचारियों से कार्यशाला के संबंध में प्रतिपुष्टि प्राप्त किया जाता है एवं कार्यालयीन

गतिविधियों में हिन्दी के कार्यान्वयन संबंधी समस्याओं पर विचार विमर्श कर उसका सहज समाधान किया जाता है।

पुस्तकालय

हमारे कार्यालय में 2 हिन्दी पुस्तकालय प्रवृत्त् है।

एक हिन्दी अनुभाग में - "पोर्ट ज्योति"

दूसरा पी एवं आर प्रभाग में है।

अधिकारी/कर्मचारियों के बीच में वनिता, सरिता, सरस सलिल, गृह शोभा, मेरी सहेली आदि हिन्दी मासिकाओं तथा हिन्दी अखबार "नव भारत टाइम्स" का संचारित किया जाता है।

हिन्दी पुस्तकों की खरीदी के लिए 50% बजट का उपयोग किया जाता है।

हिन्दी विज्ञापनों के लिए समूचित खर्च किए जाते हैं।

नकद पुरस्कार

सीबीएसई/एसएसएलसी/12 वीं कक्षा स्तर तक हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवाले कर्मचारियों के बच्चों के लिए नकद पुरस्कार योजना।

अधिकारियों /कर्मचारियों को टिप्पण और आलेखन के लिए नकद पुरस्कार।

कार्यालय में राजभाषा के श्रेष्ठतम निष्पादन की दिशा में सुझाव आमंत्रण योजना शुरू की गई। इसके अंतर्गत श्रेष्ठ सुझाव प्रदान करनेवाले अधिकारी/कर्मचारियों को हर सुझाव के लिए 500/- रुपये नकद पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

श्रद्धांजलि

श्री तदेवूस पी.सी. सीएमई विभाग के लाईनमैन के रूप में कार्यरत थे। इस होनहार कलाकार की मृत्यु 25 मई, 2016 को हुई।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह के गीत प्रतियोगिताओं में हमेशा सक्रिय रूप से भाग लेते और इसके विजेता भी होते थे। इसके अतिरिक्त टोलिक (उपक्रम) कोच्ची - संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा समारोह से संबंधित गीत प्रतियोगिताओं में भागीदारी एवं विजेता भी होते थे। उन्हें हिन्दी अनुभाग की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

अगर गलतियों को वक्त पर सुधारा नहीं जाता तो अपराध बनने में देर नहीं लगता।

मंत्रिमंडल सचिवालय

लोक शिकायत निदेशालय

क्या आप अनसुलझी शिकायतों से परेशान है?

आप लोक शिकायत निदेशाल के कार्य क्षेत्र के अंतर्गत मंत्रालय/विभागों और संगठनों से संबंधित शिकायतों के समाधान के लिए लोक शिकायत निदेशालय की सहायता ले सकते हैं। पिछले कुछ सालों में, इस निदेशालय द्वारा उठाई गई लगभग नब्बे प्रतिशत शिकायतों का संतोषजनक समाधान किया गया है।

अपनी शिकायत दर्ज कराने से पहले कृपया नीचे दी गई शतों को ध्यानपूर्वक पढें:

- आपने अपनी शिकायतों को सम्बधित विभाग के समक्ष समाधान हेतु प्रतुत कर लिया हो।
- आपकी शिकायत सेवा मामले (प्रेध्यूट, जीपीएफ इत्यादि जैसे सेवांत हितलाभों के अलाय) संबंधित विभाग के मंत्री के स्तर पर निपटाए गए मामले, वाणिज्यिक अनुबंध, न्यायाधीन मामले, ऐसे मामले जहां निर्णय लेने के लिए अर्द्ध न्यायिक पद्धति और अपैलीय प्रक्रियाएं निर्धारित की गई हैं, आरटीआई मामले, धार्मिक मामले से संबंधित न हो।
- किसी भी प्रकार के सुझाव को शिकाात के रूप में नही माना जाएगा।

लोक शिकायत निदेशालय कार्य क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले मंत्रालयों/विभागों/संगठनों की सूची

क)	रेल मंत्रालय	ज)	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक
ख)	डाक विभाग	झ)	सार्वजनिक क्षेत्र की बीमा कंपनियां
ग)	बीएसएनएल और एमटीएनएल सहितदूरसंचार विभाग	ञ)	वित्त मंत्रालय की राष्ट्रीय बचत स्कीम
घ)	दिल्ली विकास प्राधिकरण, भूमि और विकास कार्यालय, सीपीडब्ल्यूडी ओर सम्पदा निदेशालय सहित शहरी विकास मंत्रालय।	ट)	श्रम और रोजगार मंत्रालय के अंतर्गत कर्मचारी राज्य बीमा निगम नियंत्रित ईएसआई अस्पताल और औषधालय।
ङ)	पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय, इसके सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम सहित।	ठ)	कर्मचारी बविष्य निधि संगठन।
च)	भारतीय विमानपतन प्राधिकरण और एअर इंडिया सहित नागर विसानन मंत्रालय।	ड)	विदेश मंत्रालय के अंतर्गत क्षेत्रीय पासपोर्ट प्राधिकरण
छ)	केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केंद्रीय विद्यालय संगठन, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीय संस्थान, नवोदय विद्यालय समिति, केंद्रीय विश्वविद्यालय समविश्वद्यालय (केंद्रीय) और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की छात्रवृत्ति स्कीमें।	ढ)	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना
		ण)	पर्यटन मंत्रालय
		त)	युवक कार्यक्रम मंत्रालय
		थ)	पोत परिवहन, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय

नोट : आप हमारी हमारी वेबसाइट http://dpg.gov.in पर अपनी शिकायत ऑनलाइन दर्ज कर सकते हैं। आप अपनी शिकायत, संपूर्ण सूचना और संगत दस्तवेजों के साथ हमें डाक/ फेक्स या ईमेल द्वारा भेज सकते हैं।

हमसे यहां संपर्क करें:-
सचिव,
लोक शिकायत निदेशालय,
दूसरा तल, सरदार पटेल भयन, संसद मार्ग, नई दिल्ली - 110001
दूरभाषः 011-23743139, 011-23741228, 011-23363733
फैक्सः 011-23345637

हमेशा जोश के साथ जीयें, क्योंकि ठंड़े पानी में कभी चावल नहीं पकता।

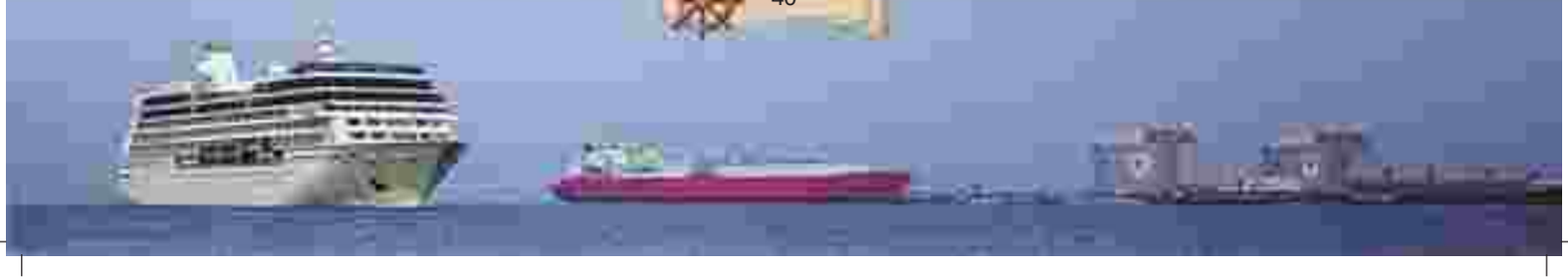

सी.के. शिवरामन
उप सामग्री प्रबंधक

समय का मनोविज्ञान

हरेक क्षण नया है। बीते क्षण के लिये रोदन की कोई यथार्थता नहीं है। भविष्य के हर क्षण हमारे लिये अनिश्चित है। किसी भी फल कुछ भी हो सकता है। इसलिये अपने जीवन के हरेक क्षण को अनमोल बनाइये और प्रतिष्ठा के साथ जीयें। यदि हम समय के हर क्षण को बुद्धिमानी तथा सटीक रूप से व्यतीत करेंगे तो निश्चित रूप से वे हमारे जीवन में महत्वपूर्ण क्षण सिद्ध होंगे। हालांकि समय तेजी से गुजरता है और हमें उसके साथ कदम से कदम मिला कर चलना होगा। समय ही जीवन है। कुछ लोग समय की अवहेलना करते हैं एवं समय भी अनुरूप से उनकी अवहेलना करता है। लोग कहते हैं कि उनके पास समय नहीं है यह इसलिये क्योंकि वे समय को अपने वश में नहीं कर पाते। जो समय को अपने वश में रखने की योजना बनाते हैं उन्हें पसन्द और नापसन्द जैसे क्षणिक कारणों को दूर करना होगा जो उन्हें अपने मूल लक्ष्य से दूर करता है जो उसी क्षण उनके लिये अति महत्वपूर्ण है। जीवन में अनुशासित (समय के अनुसार अनुशासित) होना समयनिष्ठा की ओर प्रेरित करता है। किसी को समय देना उसके प्रति स्नेह की अभिव्यक्ति होता है।

यह एहसास होना चाहिये कि हर वह क्षण जो नष्ट हुआ है वह हमेशा के लिये नष्ट हुआ है उसको वापस नहीं लाया जा सकता। समय को जीतने का केवल एक ही तरीका है कि हमारे कार्य की गति को बढ़ाया जाये। अपने कार्य को शीघ्रातिशीघ्र संपूर्ण करने की क्षमता ही सफल जीवन का रहस्य है। अपने कार्य की शीघ्र समाप्ति प्रत्येक व्यक्ति को दो विशेष उपहार देता है एक क्षमता और दूसरा समय के उपयोग की स्वतंत्रता।

विज्ञान जो समय को मापने के लिये घड़ी का उद्भावन किया भविष्य का आकलन करने में अभी तक सफल नहीं हो पाया है। समय के प्रति जागरूकता एक स्वस्थ मन का उपहार है। समय के कुशल उपयोग से एक व्यक्ति जीवन में अधिक समय प्राप्ति के संदर्भ में समृद्ध बन सकता है। गुजरते वक्त के साथ सभी बीजें अथवा स्थितियां एक दूसरे में बदलते रहते हैं। वास्तविकता यह है कि जो कुछ खो दिया है वह अपनी पूर्व स्थिति में कभी वापस नहीं आयेगा।

बच्चों को बचपन से ही समय का उचित प्रबंधन सिखाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। बच्चों को भोजन संबंधी अनुशासन में समयनिष्ठा का ज्ञान देना भी आवश्यक है। एक नैतिक

ईश्वर को आसमान में न ढूंढ़े वे तो आपके कर्म में दिखाई देते हैं।

जिम्मेदारी के रूप में समय के बारे में उन में जागरूकता विकसित किया जाना है।

1. उन्हें समय निष्ठा के साथ समय का सदुपयोग सिखाया जाना चाहिये।
2. किसी कार्य में समय का उपयोग करना है यह जानना अति महत्वपूर्ण है।
3. उन्हें समय का उपयोग किस प्रकार करना है सिखाया जाना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
4. इसके अतिरिक्त, बच्चों को यह जानकारी होना अति महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक कार्य के लिये उनके समय को कब उपयोग करना चाहिये।
5. कहाँ समय का उपयोग करना है इसकी जानकारी भी अनुरूप महत्वपूर्ण है।
6. सबसे महत्वपूर्ण बात है कि उन्हें इसकी जानकारी होनी चाहिये कि प्रत्येक कार्य के लिये कितने समय का उपयोग होना चाहिये।

समय के तीन नियम

अपने हरेक क्षण का प्रभावी उपयोग करें।

अपने समय का इस प्रकार उपयोग करे ताकि उससे सर्वाधिक फायदा प्राप्त हो सके।

समय का कभी दुरूपयोग में करें अथवा उसकी बर्बादी न होने दें।

समय के सही प्रबधन में अभिज्ञ होने के लिये एक व्यक्ति का मस्तिष्क एवं शरीर खुश एवं शांतिपूर्ण होना चाहिये। इसे सुनिश्चित करने के कुछ मार्ग इस प्रकार हैं

1. ध्यान	2. योगा	3. हास्य
4. संगीत	5. पठन	6. चित्रकारी
7. मौन	8. सेवा	9. भ्रमण

विद्यार्थियों के लिये समय-शिक्षा

विद्यार्थियों को उनके पास उपलब्ध समय को बडे ही सावधानी के साथ विभाजित कर उसका उपयोग करना चाहिये। एक विद्यार्थी का एक आदर्श दिन निम्नप्रकार से अतिवाहित होना चाहियेः

1. प्रतिदिन 6 से 8 घण्टे शयन करें।
2. दैनिक कम से कम 30 मिनट के लिये व्यायाम करने का अभ्यास करें।
3. 10 मिनट के लिये श्वसन व्यायाम का अभ्यास करें।
4. जब भी सम्भव हो 10 मिनट के लिये मौन धारण करें।
5. 10 मिनट के लिये सभी स्थितियों में आत्म-नियंत्रण का शिक्षण करें।
6. अपने सभी निजी कार्य 60 मिनट में पूरा करें।
7. विद्यालय/महाविद्यालय जाने के लिये दिन में 5 घण्टें निश्चित रूप से उपयोग करें।
8. भ्रमण उद्देश्य के लिये दैनिक 90-120 मिनट का समय रखें।
9. खेलकूद एवं अन्य आमोद-प्रमोद के लिये 60-90 मिनट समय उपयोग करें।
10. अंत में स्वअध्ययन अथवा ट्यूशन के लिये करीब 6 घण्टे समय उपयोग करें।

एक विशिष्ट व्यक्ति कैसे अपना समय का उपयोग करता है यह उसके समय ज्ञान पर निर्भर करता है। एक व्यक्ति सही मायने में तब सफल होता है जब वह प्रभावी ढंग से समय का उपयोग करने का एक संस्कृति का विकास करता है। एक व्यक्ति के पास कुल कितना समय है यह महत्वपूर्ण नहीं है अपितु वह समय का कैसे सदुपयोग करता है वास्तव में यह उसके समय ज्ञान का सही प्रमाण है। ●

किसी पर बूरे शब्द प्रयोग करने का सीधा अर्थ यह है कि हम अच्छे शब्द चयन करने में पूर्णतः असमर्थ हैं।

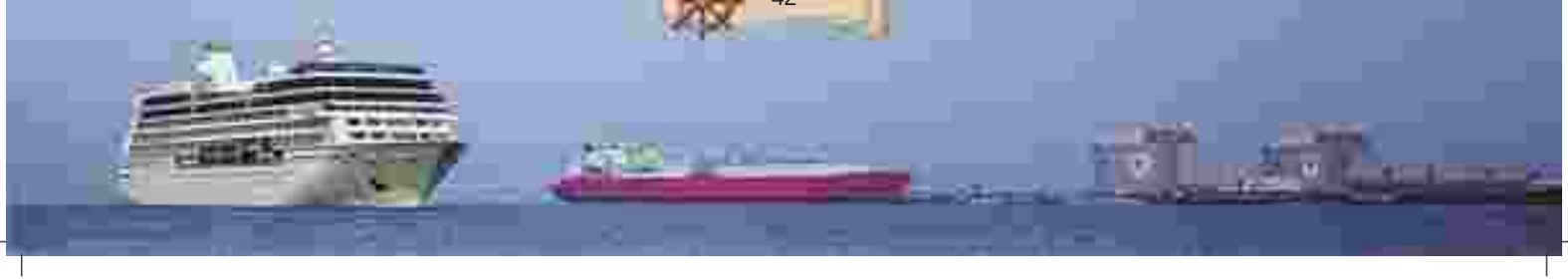

गुस्ताख़ी माफ़

1. बेटा पापा से : पापा सरकार वोट डालने का उम्र 18 साल और शादी करने का उम्र 21 साल क्यों रखा?
   पापा: बेटा सब जानते हैं कि देश संभालना आसान है पर बीवी संभालना आसान नहीं।
2. लड़का : तुम्हारा नाम क्या है
   लड़की : पहन कर बताऊँ या दिखा कर
   लड़का : क्या मतलब
   लड़की : पायल और आपका
   लड़का : ले कर बताऊँ या देकर
   लड़की : क्या मतलब
   लड़का : पप्पी।
3. शिक्षक छात्र से : एक ऐसी जगह का नाम बताओ जिसे बनाया तो आदमी ने है परन्तु वह वहाँ नहीं जा सकता।
   छात्र : सर जी! लेडिज टॉयलेट
4. शिक्षक छात्र से : अपने फादर का नाम अंग्रेजी में बताओ?
   छात्र : बिउटीफुल रेड अण्डरवियर।
   शिक्षक : हॉट नन्सेंस। हिन्दी में बताओ।
   छात्र : सुन्दर लाल कच्छा।
5. पत्नी : पंडित जी मेरे पति हमेशा मुझ से लड़ते रहते हैं। घर की सुखशांति के लिये कौन-सा व्रत रखुं।
   पंडित : मौन व्रत रख बेटी, शांति हमेशा बनी रहेगी।
6. पत्नी : मेरी शराफ़त देखो मैंने तुम्हें देखे बगैर ही शादी कर ली।
   पति : और मैरी शराफ़त देखो मैंने तुम्हें देख कर भी मना नहीं किया।
7. अध्यापक : किसी ऐसी जगह का नाम बताओ जहां बहुत सारे लोग हों फिर भी तुम अकेला महसूस करो।
   छात्र : परीक्षा कक्ष
8. तिजोरी पर लिखा था-
   तोड़ने की जरूरत नहीं, बटन दबाओ खुल जाएगी।
   बटन दबाते ही पुलिस आ गई...
   पुलिस : तुम्हें अपनी सफ़ाई में कुछ कहना है?
   चोर : मां कसम, आज इंसानियत पर से भरोसा उठ गया।
9. वकील : माई लर्ड, कानून की किताब के पेज नंबर 15 के मुताबिक मेरे मुवक्विल को बाइज्जत बरी की जाये।
   बाईज्जत बरी किया जाये।
   जज : किताब पेश की जाये।
   किताब : पेश की गई, जज ने पेज नंबर 15 खोला तो उसमें 1000 के 5 नोट थे।
   जज मुस्कुराते हुए बोला-: "बहुत खूब...
   इस तरह के 2 सबूत और पेश किये जाये।"
10. भिखारी : हैलो, पिज्जा हट?
    पिज्जा हट : यस सर
    भिखारी : 1 बड़ा पिज्जा और 1 लीटर पेप्सी भेज दो।
    पिज्जा हट : सर किस नाम से भेजूं?
    भिखारी : अल्लाह के नाम पर भेज दे रे बाबा।
11. छात्र : (मैडम से) : I love you mam
    मैडम : बतमीज! तमीज से बात कर।
    छात्र : OK. Mam, With due respect I beg to state that I love you.

अपना सेल्फी न बनायें, बनाना है तो अपना एक ईमेज़ बनायें।

12. चिण्टु (पहलवान से) : पहलवान जी आप एक साथ कितने आदमी को उठा सकते हो?
पहलवान : 15
चिण्टु : धत् तुमसे अच्छा तो मेरा मुर्गा है जो एक साथ पूरे मुहल्ला को उठा देता है।

13. अध्यापक रोहन : अगर तुम्हारे पास पंद्रह सेब हो जिनमें से छः तुम निर्मला को, चार सुनिता को और पांच डौली को दे दो तो तुम्हें क्या मिलेगा?
रोहन : सर, मुझे तीन गर्ल फ्रेंड मिलेगी।

14. अध्यापक ने छात्रों से कहा जो छात्र स्वर्ग में जाने की इच्छा रखता है - वह हाथ ऊपर उठाए।
सभी छात्रों ने हाथ उठा दिए मगर सुरेश ने हाथ ऊपर न उठाए।
अध्यापक : क्यों सुरेश तुम स्वर्ग में नहीं जाना चाहते?
सुरेश : नहीं मास्टर जी
अध्यापक : क्यों?
सुरेश क्योंकि मेरी मां ने कहा था कि स्कूल से सीधे घर आना - वरना हाथपैर तोड़ दूंगी।

15. पप्पू (अपनी माँ से) क्या आपने मुझे पैदा होने से पहले देखा था।
माँ - नहीं।
पप्पू - तो आपने मेरे पैदा होने के बाद मुझे पहचना कैसे।

16. सरदार (गुस्से से) : वेटर, इस चिकेन बिरियानी में चिकेन क्यों नहीं है?
वेटर : गुलाब जामुन में गुलाब कहां होता है?
सरदार : हाँ यार सॉरी।

17. पहला दोस्त : यार अभी आपकी मम्मी की खांसी कैसी है?
दूसरा : यार खांसी तो बंद हो गई मगर सांस रुक रुक के आ रही है।
पहला : धीरज रख यार खुदा ने चाहा तो वह भी बंद हो जायेगी।

18. एक सरदार जी सुबह-सुबह रपट लिखाने थाने पहुंचे।
सरदार जी : मुझे फ़ोन पर काट देने की धमकी मिल रही है।
थानेदार : कौन धमकी दे रहा है, नाम तो बताओ।
सरदार जी : बीएसएनएल वाले, कहते हैं, बिल नहीं भरा तो काट देंगे।

19. पति : आज खाना क्यों नहीं बनाया?
पत्नी : गिर गई थी और लग गई थी।
पति : कहाँ गिरी और कहाँ लगी
पत्नी : जी तकिये पर गिर गयी थी और आँख लग गयी थी।

20. पापा : नालायक इतनी रात को कहाँ से आ रहा है
बेटा : गलफ्रेंड से मिलने गया था।
पापा : किसलिये?
बेटा : हाँ पापा 7-8 किस तो लिये।

21. एक CUTE से बच्चे को देख कर
एक लड़की ने उसके गाल पर एक KISS कर दिया
लड़की : SORRY तुम्हारे गाल में लिपस्टिक के दाग लग गये।
बच्चा : IT'S OKEY कुछ अच्छा करने में अगर दाग लगते हैं तो दाग अच्छे हैं।

22. मारुति 800 की नीलामी हो रही थी। बोली लगी...
10 लाख, 20 लाख, 30 लाख
पप्पू ने मालिक से पूछा : इस खटारा में ऐसा क्या है?
मालिक : इसके 23 एक्सीडेंट हुये हैं और हर बार पत्नी ही मरी है।
पप्पू : 70 लाख।

23. एक फैमिली शोले फिल्म देख कर घर आये। फिल्म का जोश रग रग में दौड़ रहा था तो पति ने अपनी पत्नी से कहा नाच बसन्ती नाच, तब उनका बेटा बोला ना मम्मी ना, इस कुत्ते के सामने मत नाचना।

24. आपने कभी सोचा है आई लव यू का आविष्कार किस देश में हुआ।

हर खुबसूरत लोग अच्छे नहीं होते परंतु अच्छे लोग हमेशा खुबसूरत होते हैं।

मेरे ख्याल से चाईना में हुआ होगा क्योंकि इसमें सारी खुबियाँ चाईना की है। न कोई गारंटी और न कोई वारंटी।

चले तो जिंदगी भर और न चले तो सुबह शुरु होकर शाम तक नहीं टिकता।

25. क्या आपने कभी सोचा है। जब एक अकेला टीचर बच्चों को सारे विषय पढ़ा नहीं सकता, तब एक अकेला स्टूडेंट सारे विषयों को कैसे पढ़ सकता है।
26. दो हफ्तों से ज्यादा खांसी टीबी बन जाती है
और समय पर गर्लफ्रेंड न बदलो दो बीवी बन जाती है।
27. शिक्षक (छात्र से) : भारत में सबसे ज्यादा बरफ़ कहां गिरते हैं।
छात्र : सर! दारू के ग्लास में।
28. भूगोल की क्लास में गंगा पर चर्चा हो रही थी।
अध्यापक : बच्चों, बताओ गंगा कहां से निकलती है और कहाँ जा कर मिलती है।
पप्पू : सर्, गंगा स्कूल आने के बहाने घर से निकलती है और मंदिर के पीछ जा कर कालू से मिलती है।
29. क्या आप बता सकते हैं कि आरेंज्ड मैरिज और लव मैरिज में क्या अंतर है?
मेरी राय में आरेंज्ड मेरिज - बिका हुआ माल वापस नहीं किया जायेगा।
लव मैरिज - पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें।
30. लोग कुछ दिन सिगरेट, शराब पीते हैं और उनको लत लग जाती है।
हमसे सीखो हम बचपन से पढ़ाई करते आ रहे हैं परन्तु अभी तक लत नहीं लगा।
खुद पर नियंत्रण होना चाहिये, यार।
31. शिक्षक : सबसे चतुर जानवर कौन है।
छात्र - हिरन
शिक्षक - वो कैसे? जी उसने सत्ययुग में राम को फंसाया था और कलयुग में सलमान को।

कर्म ही पूजा

टी. जयदेवन
सांख्यिकीय सहायक

नारद जी को अपनी भक्ति पर बड़ा अहंकार था तो भगवान विष्णु ने उन्हें एक सीख देने के लिए कहा, नारद जी तुम से भी बड़ा पृथ्वी लोक में मेरा एक भक्त है और उन्होंने नारद जी को उस व्यक्ति जो कि एक किसान था, उसकी दिनचर्या को ध्यान पूर्वक देखने को कहा। नारद जी पृथ्वी लोक की ओर चल दिए और जाकर देखा कि वह किसान स्नान, शौच, भोजन आदि नित्यकर्म और पारिवारिक कर्मों के पश्चात अपने खेती कर्म की ओर निकल पड़ा। पूरे दिन के अथक श्रम के साथ साँझ ढले थकाहारा वह रात्र भोजन के बाद सोने से पहले एक बार नारायण उच्चारण कर सो गया। नारद जी बोले प्रभो मैं तो प्रतिक्षण आपका नाम लेता रहता हूँ। परंतु वह किसान पूरे दिन में सिर्फ़ एक ही बार आपका नाम लिया और कोई पूजा आराधना नहीं की। तब भगवान बोले नारद तुमको मेरी नाम लेने के सिवाय दूसरे कोई काम ही नहीं। परंतु वह अपने सारे कर्मों को निष्ठापूर्वक संपादन किया और समय मिलने पर मेरा नाम लिया। मेरी पूजा या नाम उच्चारण से कही महत्वपूर्ण है कर्म। क्योंकि मैं कर्म में ही समाहित हूँ। इसलिए वह मेरा सबसे बड़ा भक्त है।

सीखः ईमानदारी से कर्म करना ही वास्तव में ईश्वर की सच्ची आराधना है।

यह पूरी दुनिया एक अतिथि गृह है और हम सब यहाँ केवल एक अतिथि हैं।

राजभाषा हिन्दी: जिम्मेदारी नहीं नैतिकता

मानस रंजन त्रिपाठी
हिन्दी अनुवादक

सहज उच्चारण एवं बोधगम्य होने के बावजूद भाषा अपने आप में एक व्यापक शब्द है। इसके उद्भव, विकास व परिभाषा सदियों से ही भाषाविदों के शोध का विषय रहा है। भाषा स्वभावजः मनुष्यकृत अथवा ईश्वर प्रदत्त यह आज भी हमारे लिये अमीमांस्य है। वैदिक शास्त्रों की मानें तो यह शब्द मूलतः संस्कृत के 'भाष' धातु से निष्पन्न हुआ है। यूँ तो हम भाषा को मानव के भाव अभिव्यक्ति का एक साधन के रूप में परिभाषित करते हैं। परन्तु अपने भावों का संप्रेषण तो वे भी कर लेते हैं जिनकी वाक् शक्ति नहीं होती। कभी कभी अंग भंगिमा, भू-संचालन तथा मुखाकृति और ध्वनि के विभिन्न संकेत द्वारा मानव अपने भाव की अभिव्यक्ति कर लेता है। ऐसे में भाव संप्रेषण के इन शारीरिक चेष्ठाओं को भाषा के रूप में परिभाषित करना कहाँ तक उचित है। भाषा विज्ञान की दृष्ठि से यह मानवीय अंग भंगिमा व संकेत अव्यक्त वाक् होते हैं जिनमें अर्थ प्रायतः अस्पष्ट होते हैं। भाषा तो वह है जिसमें शब्द और अर्थ दोनों स्पष्ट हों और जिनका एक परिनिष्ठित तथा वर्णनात्मक रूप हो। निष्कर्षतः हम भाषा की परिभाषा को 'भाव और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए रुढ़ अर्थ में प्रयुक्त ध्वनि संकेतों की एक सुगठित व्यवस्था के रूप में स्वीकार कर सकते हैं बशर्ते कि वह ध्वनि व्यवस्था व्याकरणिक रूप से परिनिष्ठित तथा परिमार्जित हो। भाषायी उद्भव के संदर्भ में मानव सभ्यता के इतिहास का पुंखानुपुंख विश्लेषण करें तो आदिम काल में मानव शारीरिक भंगिमाओं के माध्यम से अपने भाव का संप्रेषण करता था। कालांतर में ध्वनि का विकास हुआ, ध्वनियों के संयुक्त रूप से शब्द, शब्दों के समाहार से वाक्य और वाक्यों से बोली तथा भाषा का विकास हुआ।

बोली और भाषा में अंतरः वैसे तो बोली और भाषा में कोई खास अंतर नहीं होता। इनमें अंतर मुख्यतः दोनों के प्रयोग क्षेत्र के विस्तार पर निर्भर करता है। शारीरिक अंगभंगी और ध्वनि की तरह बोली भाषा की एक छोटी इकाई होती है। व्यावहारिक विविधता के कारण समाज में एक ही भाषा के कई बोली विकसित होते हैं। बोली का व्यावहारिक क्षेत्र अति सीमित है जो मुख्यत ग्राम तथा जनपद से संबंधित है। अतः इसमें देशज शब्दों का प्राबल्य होता है। व्याकरणिक दृष्टि से यह परिमार्जित नहीं होता परिणामत इसमें साहित्यिक रचनाओं का अभाव रहता है। इसके विपरीत भाषा अपने मौखिक तथा लिखित स्वरूप में अत्यंत समृद्ध तथा परिमार्जित होती है और इसमें सृजनात्मक साहित्य का भरमार होता है।

भाषा के रूप में हिन्दी का विकासः भाषा का नदी समान होती है जिसके प्रवाह में ही उसकी प्रगति है। प्रचार प्रसार की सींचन से ही भाषा समृद्ध बनती है। यूँ तो आर्य संस्कृति को भारत की सर्वप्राचीन संस्कृति मानी जाती है और संस्कृत आर्य भाषा परिवार की मूल तथा आद्य भाषा है। कालान्तर में क्षेत्र

शिक्षक द्वार खोलते हैं; लेकिन प्रवेश आपको स्वयं ही करना होता है।

विशेष पर सभी भारतीय भाषाएँ संस्कृत से ही विकसित हुये है। हिन्दी भी इससे भिन्न नहीं है। परन्तु हिन्दी किसी एक क्षेत्र विशेष की भाषा नहीं है। इसका विकास स्वतंत्र रूप से हुआ है। भाषा के रूप में हिन्दी के उद्‌भव व विकास की एक समृद्ध परंपरा रही है। इसकी ऐतिहासिक विकासधारा का अनुशीलन करें तो प्राचीन संस्कृत वैदिक एवं लौकिक दो रूप में विभाजित हुआ फिर लौकिक संस्कृत से पहली प्राकृत एवं दूसरी प्राकृत अथवा पाली दो भाषाओं का विकास हुआ। तत्पश्चात पाली से शौरसेनी, अर्द्धमागधी और मागधी तीनों भाषाओं का उद्‌भव हुआ। फिर शौरसेनी से नागर अपभ्रंश और अर्द्धमागधी से अर्द्धमागधी अपभ्रंश का विकास हुआ और नागर अपभ्रंश से पश्चिमी हिन्दी और पूर्वी हिन्दी के रूप में दो शाखाएँ निकली और हमारी हिन्दी का वर्तमान स्वरूप इन दो शाखाओं के ही संयुक्त तथा परिवर्तित रूप है। हिन्दी भाषा के उद्‌भव के संदर्भ में प्रचलित अवधारणा को मानें तो इसकी उत्पत्ति 10 वीं शताब्दी में ही हुई थी। हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत से बंगाली, मराठी, पंजाबी और दक्खिनी जैसी कई समकालीन भाषाओं का विकास हुआ परन्तु हिन्दी के व्यतिरेक थे सभी भाषाएँ अपनी क्षेत्रीय सीमाओं में सीमित हो कर एक क्षेत्रीय भाषा बन कर रह गई जबकि हिन्दी अपनी वैज्ञानिक लिपि, समृद्ध शब्द संपदा और रचनाधर्मी सामर्थ्य के कारण निरंतर विकास के प्रवाह के साथ उद्दिनांकित होती गयी। व्याकरणिक रूप से परिमार्जित इसके शब्दविन्यास व भाषा शैली, अपवादविहीन सहज प्रायोगिक नियम एवं सुबोधता ही इसे लोकप्रियता के चरम शिखर पर पहुंचाया है। यही कारण है कि आज हिन्दी दुनिया के तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा की प्रसिद्धि को प्राप्त किया है।

हिन्दी को राजभाषा की मान्यता: सास्कृतिक रूप से भारत भले ही प्राचीन परंपराओं का दास रहा हो परन्तु उपनिवेशवाद के दौरान राजनैतिक दृष्टिकोण से भारत में एक नये युग का शुभारंभ हुआ था। अंग्रेजी हुकूमत ने हमारी भाषायी विविधता का फ़ायदा उठाते हुये अपनी 'फूट डालो और राज करो' रणनीति को अपना कर भारत को कई भाषायी खण्डों में विभाजित कर दिया। ऐसे में जहां चारों ओर विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के बल पर देश की राष्ट्रीय एकता दावं पर लगी थी हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने देश में हिन्दी भाषा द्वारा भाषायी सौहार्द स्थापित कर राष्ट्रीय एकता की पुनःस्थापन में पुरजोश प्रयास किया। उन्होंने हिन्दी को स्वतंत्रता आंदोलन के लिये एक राष्ट्रीय स्वर के रूप में चुना। हिन्दी भाषा ने राष्ट्र प्रेम एवं राष्ट्रीयता को एक राजनीतिक आयाम देकर नवजागरण का सूत्रपात करते हुये स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा दी। उस दौरान पूरा देश अपनी क्षेत्रीय भाषायी चिंतनों से ऊपर उठकर हिन्दी का जोरदार समर्थन किया और स्वराज, स्वदेशी एवं स्वभाषा की नारा के साथ हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिये समूचा राष्ट्र प्रतिबद्ध था। परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारी मानसिकता कुंठित हो गयी और हम भाषायी क्षेत्रीय बंधन में फिर से जकड़ते चले गये और हिन्दी को देश की राष्ट्रभाषा बनाने का स्वर धीमा हड़ गया। अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी हमारी मानसिकता पर उनकी भाषा का प्राधान्य बना रहा। उनकी भाषा व संस्कृति को अपनाने में हम गर्व अनुभव करने लगे। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने हिन्दी भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक जनाधार देते हुये भारत में लोकतंत्र का स्वप्न देखा था और यह आश रखा था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत हमारे लोक व्यवहार तथा शासकीय

हमेशा अपने आदर्श और पदवी में से आदर्श को चूनें, पदवी की आवश्यकता नहीं रहेगी।

गतिविधियों में हमारी स्वदेशी भाषा का प्रयोग होगा। परन्तु हिन्दी को देश की एक मात्र राष्ट्र भाषा बनाने का स्वप्न स्वप्न में ही रह गया। वर्षों के अथक श्रम और बलिदानों के बदौलत देश को आज़ादी मिली। आजाद भारत का अपना संविधान बना। परन्तु जब संविधान सभा में देश की राष्ट्र भाषा पर बहस हुई तब हमारे ही कुछ अहिन्दी भाषी क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर तीव्र विरोध किया। इसके अतिरिक्त हिन्दी के अधिकांश पक्षधर भी अंग्रेजी भाषा का समर्थन किया। ऐसी विवादास्पद स्थिति के मद्देनजर देश में आंतरिक शांति और भाषायी सौहार्द स्थापित करने के लिये संविधान सभा के दो अम्लान बिभुति डॉ. कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी एवं श्री गोपाल स्वामी आयंगर ने एक सांविधानिक समझौता का प्रस्ताव रखा जिसके तहत देश के सभी क्षेत्रीय भाषाओं को राष्ट्रभाषा की मान्यता दी जायेगी परन्तु देवनागरी लिपि में हिन्दी को संघ की राजभाषा बनाया जायेगा और इसमें प्रयुक्त होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। संविधान सभा में भाषा विषयक प्रावधानों पर 12 सितम्बर 1949 को हुई लंबी बहस में आखिर विराम लगा और 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा में भारी बहुमत से इस प्रस्ताव को स्वीकार करते हुये देवनागरी लिपि में हिन्दी को संघ की राजभाषा बनायी गयी और भारत के गणतंत्र की राजभाषायी नीति को मूर्त रूप देते हुये संविधान में भाग-5 अनुच्छेद 120, भाग-6 अनुच्छेद 210 एवं भाग-17 अनुच्छेद 343 से 351 में राजभाषा विषयक प्रावधानों को व्यापक रूप से शामिल किया गया और यह भी सुनिश्चित किया गया कि संविधान लागू होने के 15 वर्षों की अवधि तक हिन्दी संघ की राजभाषा होने के बावजूद अंग्रेजी का प्रचलन सहायक राजभाषा के रूप में होता रहेगा। फिर राजभाषा हिन्दी के व्यापक प्रचार प्रसार और शासकीय गतिविधियों में इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिये राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम, राजभाषा संकल्प और सर्वोपरि राजभाषा संबंधी राष्ट्रपति के आदेश जारी किये गये।

जिम्मेदारी नहीं नैतिकता: जिम्मेदारी एवं नैतिकता दोनों अपने आप में अति महत्वपूर्ण शब्द हैं। जहां जिम्मेदारी या उत्तरदायित्व का प्रश्न आता है वहीं चूक की संभावना भी रहती है परन्तु नैतिकता के क्षेत्र में ऐसा नहीं होता। हिन्दी के संबंध में आज यह सबसे बडा प्रश्न है कि हिन्दी हमारी जिम्मेदारी है या नैतिकता। हिन्दी को संघ की राजभाषा की ताज पहना कर हम भले ही यह क्यों न सोच लें कि हमने अपनी सांविधानिक जिम्मेदारी को पूरा कर लिया है परन्तु सच तो यह है कि स्थिति सिर्फ प्रेरणा व प्रोत्साहन की बैसाखी पर चलने वाली एक सरकारी भाषा बन कर रह गयी है और इसकी प्रगति को सिर्फ राजभाषा विभाग और इसके कार्यान्वयन के लिये नियुक्त हिन्दी अधिकारी व अनुवादकों के कंधों पर डाल कर हम अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाते हैं। यह एक निर्विवाद सत्य है कि राजभाषा के रूप में हिन्दी की प्रगति की याद तो हमें सिर्फ सितम्बर माह में चलाये जाने वाले हिन्दी दिवस, सप्ताह, पखवाड़ा, संगोष्ठी जैसे सरकारी कार्यक्रम अथवा संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान ही आती है। तब पूरा कार्यालय हिन्दी को लेकर संजीदा है जाता है। सच तो यह है कि ये हिन्दी सप्ताह व पखवाड़ा आज सिर्फ एक सरकारी औपचारिक

समारोह बन कर रह गया है। इस दौरान सरकारी स्तर पर एक बनावटी सक्रियता आ जाती है, हिन्दी की बदहाली पर जम कर भाषणबाजी होती है और इसकी प्रगति के लिये कई वायदे और कसमे खाये जाते हैं। परन्तु समारोह के अंत में सबका जोश ठंडा पड जाता है। पिछले छह दशक से ऊपर हम हिन्दी दिवस, सप्ताह व पखवाड़ा मनाते आ रहे हैं परन्तु क्या ईमानदारी से हम यह सकते हैं कि इससे हिन्दी की वास्तविक प्रगति हुई है? सरकारी स्तर पर ही सही क्या हिन्दी को अपने हृदय की वाणी के रूप में स्वीकार करने की मानसिकता लोगों के मन-मस्तिष्क में पनपा है? निःसंदेह नहीं। कागजी तौर पर हम भले ही हिन्दी की प्रगति की डंका बजा रहे हों परन्तु व्यावहारिक तौर पर हिन्दी हमेशा ही उदासीनता व उपेक्षा का पात्र रही है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय अस्मिता व अभिव्यक्ति का स्वर बन कर हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा बनने का जो स्वप्न लिये हिन्दी पुष्पित तथा पल्लवित हो रही थी राजभाषा बनते है निष्पाण तथा निर्जीव बन गयी है। विडंबना यह है कि हम पराधीन थे तब हमारे पास स्वाधीन भाषा थी अब हमें आज़ाद हुये 7 दशक बीत चुके हैं परन्तु हमारी भाषा आज भी पराधीन ही है। आज भी हम आधुनिकता की द्वाही देकर अंग्रेजी के प्रबल पक्षधर बन बैठे हैं और अंग्रेजी बोलना अपनी शान समझते हैं। यही कारण है कि स्वाधीन भारत में अंग्रेजी भाषा का बर्चस्व बढ़ता ही जा रहा है और हमारी हिन्दी मानसिक स्तर पर उपेक्षा और उदासीनता का शिकार बन दम तोड़ रही है। प्रशासन के क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में भले ही हमें काफी हद तक सफलता मिली हो परन्तु अभी भी कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां हिन्दी का प्रयोग शून्य के बराबर है। उदाहरण के तौर पर हमारी शिक्षा व्यवस्था का माध्यम आज भी अंग्रेजी भाषा को पूर्ण समर्थन दे रहा है और आज भी हमारी न्यायपालिका का पूर्ण हिन्दीकरण नहीं हुआ है। आखिर कब तक हम अपनी हिन्दी की उपेक्षा कर पश्चिमी भाषा की बर्चस्व को स्वीकार करते रहेंगे। यह भाषायी पराधीनता नहीं तो और क्या है? आज हमारे पास हिन्दी के लिये संसाधन की कोई कमी नहीं है, कमी है तो सिर्फ मानसिकता की। हिन्दी की प्रगति को हम सिर्फ राजभाषा विभाग या चंद हिन्दी कर्मियों के ऊपर नहीं छोड सकते। आज वह समय आ गया है कि हम हिन्दी को एक जिम्मेदारी की तरह नहीं अपितु नैतिकता की तरह स्वीकार करें और हिन्दी के प्रति अब तक की गयी उपेक्षा के प्रायश्चित स्वरूप हिन्दी को राजभाषा की सीमित परिसीमा से मुक्त कर उसे जन जन की भाषा बनाते हुये एक व्यापक मंच प्रदान करें ताकि वह सरकारी रूप से नहीं अपितु व्यावहारिक तौर पर हमारी राष्ट्रीय पहचान बनें। आज हिन्दी को जिम्मेदारी की नहीं नैतिकता की जरूरत है। हम सभी भारतीय को अपनी क्षेत्रीय भाषायी चिंतन से ऊपर उठकर सरकारी औपचारिकता से दूर हिन्दी के निस्वार्थ सेवक बन हिन्दी प्रगति अभियान में स्वयं को शामिल करना होगा तभी हमारे राष्ट्रपिता महात्मागांधी का हिन्दी को एक राष्ट्र भाषा बनाने का स्वप्न साकार होगा। क्योंकि हिन्दी से ही हिन्दुस्तान का वजूद है और हिन्दी प्रेम ही वास्तव में राष्ट्र प्रेम की सही परिभाषा है।

चलिये एक कदम हिन्दी प्रगति अभियान की ओर।

●

जो लोग अपने इतिहास को भूल जाते है उनमें इतिहास रचने की क्षमता नहीं होती।

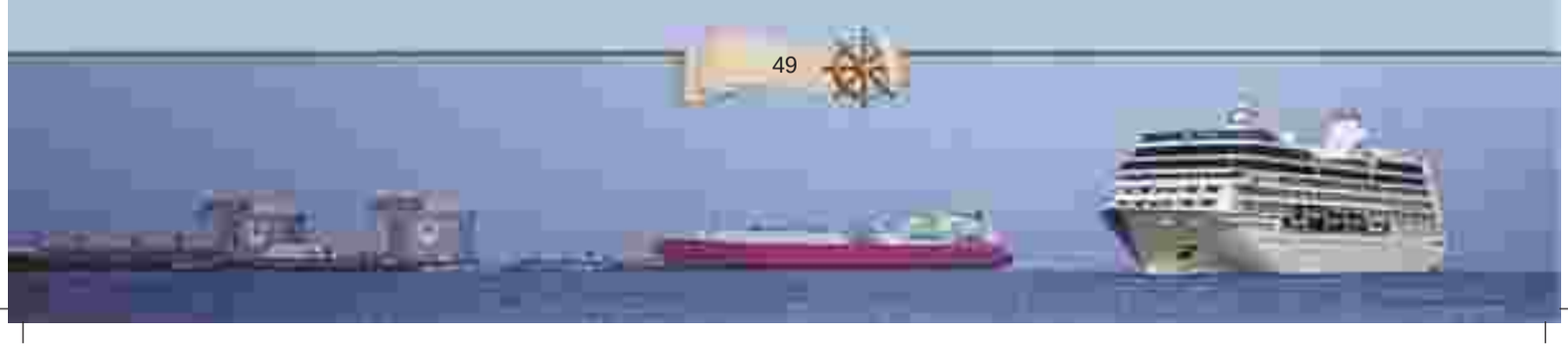

मौसम बरसात का

रितिका राजेश
तिबिना, लेखाकार की सुपुत्री

देखा मैं ने आकाश पर
सोचा मैं ने,
क्या हैं यह माया!
नीला आकाश बदल गया काला।
तब ही, इधर-उधर लहराते,
पवन ने मुझसे बोला
कि मौसम है बरसात का।
आया है यह पहली बूंद धरती पर,
माता प्रकृति की कठिन ताप तपस्या के ऊपर
कैसे मैं खुश नहीं रहूँ,
इस मनोहारिता देखकर,
कितना सुंदर कितना प्यारा,
मौसम यह बरसात का।
नीले-नीले अंबर को
काले बादल ने चूमा
यह पहली बूंद ने
सूखी धरती को चूमा,
खो गया यह दिनकर,
काले बादल में,
और खो गया मेरा दुख
इस सुंदर बरसात पर।
खो जाएगा हर दुखी मन,
इस वर्ण की माला पर,
कितना सुंदर कितना प्यारा,
मौसम यह बरसात का।
यह बरसात ही है
सागर की नमकीन पानी का पुनर्जन्म
यह बादल ने ही लिया है।
भूमि का यह दुख
और यही बादल ने ही सूखा है,
भूमि का यह दुख।
इसी बादल ने ही सूखा है
वृक्षों-नदियों का दुख।

कितना सुंदर, कितना प्यारे
मौसम यह बरसात का।
प्रकट होती है प्रकृति की खुशी
इन नन्हें मेंडकों से।
गाते नाचते और कूदते
इन नन्हें मेडकों से।
मेरी माता प्रकृति।
क्या है आपकी यह छाया,
यह सच है कि
आपके जैसा महान चित्रकारी
इस धरती में ही नहीं।
किंतु मैं आप से यह प्रश्न पूछना चाहता हूँ
क्या आप बिलकुल खुश है
पता चलता है मुझे
हंसते है बाहर से आप
किंतु रोते हैं अंदर ही अंदर रोते है
इतनी पीड़ा सहके भी,
आपने हमसे दया दिखाया है माँ।
क्या यह बारिश है आपके आंसू
मुझे पता है कि
इस लालची इनसान ने
आपके इस सुंदर बरसात पर,
दिया यह विष।
क्षमा मांगती हूँ मैं, माँ
आपको दुख पहूँचाने के लिए।
धन्य हो गया मैं माँ,
आपकी यह वरदान से
आपकी यह सुंदर सृष्टि से
कितना सुंदर कितना प्यारा
मौसम यह बरसात का।

मां बाप के रूप ने ईश्वर का विकल्प तो है परंतु मां बाप का कोई विकल्प नहीं।

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के महत्वपूर्ण गतिविधियों की झांकियाँ

माननीय पोत परिवहन मंत्री द्वारा कारवाहक पोत के तटीय चलन का शुभारंभ

आधुनिकीकरण के अभिनव प्रयास के रूप में स्टेकर का शुभोद्घाटन

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के अग्नि शामक दल द्वारा कोनकान टैंक परिसर में अग्निशमन

शीर्षस्थ पदाधिकारियों द्वारा स्वच्छता अभियान

नन्हें चित्रकार

सरुण पी.एस.

क्रिस रोबी

रितुल राजेष

अभिनव सी. अशोक

श्रुतिका षाजी

श्रीनिधी एस.

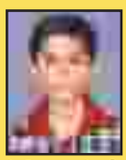

टेरिक रोबी

अश्वती टी.